सितम्बर 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

रूसी तेल पर रार

ट्रंप का टैरिफ और भारत का स्वाभिमान

एनटीपीसी
NTPC

एनटीपीसी NTPC
50 वर्षों से विद्युत विकास में समर्पित

नारी भविष्य संवारती है,
नारी राह दिखाती है।

महिलाओं की समान भागीदारी के साथ बेहतर कल का निर्माण

एनटीपीसी में, हमारा मानना है कि बाधाओं को पार करने की शुरुआत अवसर से होती है। लाइन फंक्शन से लेकर लीडरशिप तक की भूमिकाओं तक, हम ऐसा वातावरण तैयार करते हैं जहाँ महिलाएं कामयाब होने के साथ-साथ बदलाव लेकर आएं। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, हम समावेशिता, समानता एवं प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं।

हमें फॉलो करें: /ntpc1 /ntpcltd1 /ntpclimited /company/ntpc /ntpclimited | www.ntpc.co.in

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 10, सितम्बर 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - योगेन्द्र नारायण, दिनेश चंद्र
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य, महेश कुमार यादव
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार गुप्ता

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266 कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191393, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड,राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105
8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010
मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
प्रकृति की भयावहता में छुपे संदेश को समझना होगा... 2

कवर स्टोरी :
रूसी तेज, अमेरिकी टैरिफ... 3-5
धर्म की आड़ में... 6-9

साहित्य
हिन्दी का अमृत महोत्सव 10-11

कहानी
गुमशुदा सपनें 12-14

लघुकथा
बीना सिंह की दो लघु कथाएं 15

कविता
वेद मिश्र की तीन कविताएं
मानपत्र - डा. यशोधरा भटनागर 16

खबरें
बालको की सर्कुलर... 17
बीसीसीएल और सीपेट... 18
एनटीपीसी कुडगी... 19

उपलब्धि
सेल की आईएनएस उदयगिरी... 20

स्मरण
काम और नाम दोनों गुमनाम 21-22
मुस्लिम समाज के तीन रत्न 23-24

स्मृति शेष 25-27

पर्यटन
इत्र की नगरी बुरहानपुर 28

ब्यूटी फैशन
टमाटर स्क्रब फेशियल 29

खेती बाड़ी
आधुनिक कृषि प्रसार 30-31
स्टार्टअप के साथ खेती का भविष्य 32-33

धर्म-कर्म
पीपल की पूजा क्यों 34

ज्योतिष 35

स्वास्थ्य- बुन्देलखण्ड में एनिमिया 36-37
बालको अस्पताल में प्लास्टिक सर्जरी 38

खेल-खिलाड़ी 39

सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं।
ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

प्रकृति की भयावहता में छुपे संदेश को समझना होगा...

हिमाचल,जम्मू-कश्मीर,उत्तराखंड आदि हिमालयी राज्यों और क्षेत्रों में बादल फटने,भूस्खलन,बाढ़ की बढ़ती घटनाओं से हो रही जन-धन की हानि और विकराल होती स्थिति को गंभीरता से समझना होगा। बढ़ते वैज्ञानिक सोच और नित नये प्रयोगों के बाद मनुष्य की बुद्धि विकसित हो रही है या कुंठित यह समझना कठिन हो गया है। मौसम विभाग की चेतावनी को नज़र अंदाज़ करने में जितना दोष प्रशासन का है उससे कहीं अधिक उन पर्यटकों का भी है जो मौसम की मार को ना समझकर यात्रा करते हैं। कश्मीर के विभिन्न स्थानों किश्तवाड़, कठुआ और रियासी आदि जनपदों में बादल फटने के बाद प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा पर रोक लगा दी। माँ वैष्णों देवी यात्रा के मुख्य मार्ग को भी बंद किया गया था परंतु पुराने रास्ते से आवागमन चल रहा था। प्रशासन की ढील से चेतावनी के बाद भी समान्य दिन की भाँति आवागमन चलता रहा। पूरे क्षेत्र को बंद करके अलर्ट जारी करने में देरी की वजह से वैष्णों देवी दर्शन यात्रा में सैकड़ों लोग हताहत हुए। पूरे कश्मीर में लगभग 150 से अधिक जानें चली गयी। इस दैवीय आपदा के पीछे मानव जनित भौतिक सुख प्रबंधन सबसे ज्यादा नुकसान दायक रहा है। हिमालयी क्षेत्रों में विकास के नाम पर वनों,पहाडों को काटकर बनाये जा रहे रास्ते आदि से पहाड़ों को खोखला किया जा रहा है। उत्तराखंड पहले भी बड़ी त्रासदी झेल चुका है। आने वाले समय में इस तरह का संकठ बढ़ता ही जाएगा ऐसा संकेत विगत दस वर्षों में लगातार बढ़ रहे हादसों से मिल रहा है। प्राकृतिक असंतुलन से बिगड़ रहे हालात पर गम्भीर चिंतन और सुधार पर काम करने की जरुरत है। पर्यावरणविदों से मंथन कर भविष्य के लिए सचेत होना चाहिए। वहीं यह भी देखना चाहिए कि हर वर्ष बदलते पर्यावरणीय स्थिति पर सरकार और प्रशासन आँख क्यों बंद कर रखा है। मंदिरों के पट बंद होने के बाद भी पर्यटकों का आवागमन होता रहता है। हिमाचल की भयावहता ने तो जन जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया है। विगत वर्षों से जन धन की हानि निरंतर बढ़ी है फिर भी जन मानस और सरकार को कोई फर्क नही पड़ रहा है। मौसमी भविष्यवाणियों की भी अनदेखी हो रही है और सामान्य विवेक से भी यह समझ नही आ रहा कि बरसात के मौसम में पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा क्या-क्या नुकसान कर सकती है। प्रकृति की यह भयावहता और विनाश लीला में छुपे संदेश को गंभीरता से समझना होगा वरना यह दोष केवल अमानवीय होते शासन, प्रशासन का ही नहीं बल्कि उनका भी है जो प्रत्येक चेतावनी को नज़र अंदाज़ कर खुद को इस विनाशकारी घटना का हिस्सा बनाने पर आतुर हुए जाते हैं।

यह स्थिति हिमालयी क्षेत्रों के अलावा देश के अन्य वनों पहाड़ों की भी है। वृक्षों से आच्छादित पहाड़ वीरान हो गये हैं। अति वृष्टि, अति गर्मी असंतुलित होते पर्यावरण की ही देन है ऐसे में प्रकृति का बढ़ता कोप अवश्यंभावी है।

कश्मीर के विभिन्न स्थानों किश्तवाड़, कठुआ और रियासी आदि जनपदों में बादल फटने के बाद प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा पर रोक लगा दी। माँ वैष्णों देवी यात्रा के मुख्य मार्ग को भी बंद किया गया था परंतु पुराने रास्ते से आवागमन चल रहा था। प्रशासन की ढील से चेतावनी के बाद भी समान्य दिन की भाँति आवागमन चलता रहा। पूरे क्षेत्र को बंद करके अलर्ट जारी करने में देरी की वजह से वैष्णों देवी दर्शन यात्रा में सैकड़ों लोग हताहत हुए। पूरे कश्मीर में लगभग 150 से अधिक जानें चली गयी। इस दैवीय आपदा के पीछे मानव जनित भौतिक सुख प्रबंधन सबसे ज्यादा नुकसान दायक रहा है।

रूसी तेल, अमेरिकी टैरिफ और भारतीय स्वाभिमान

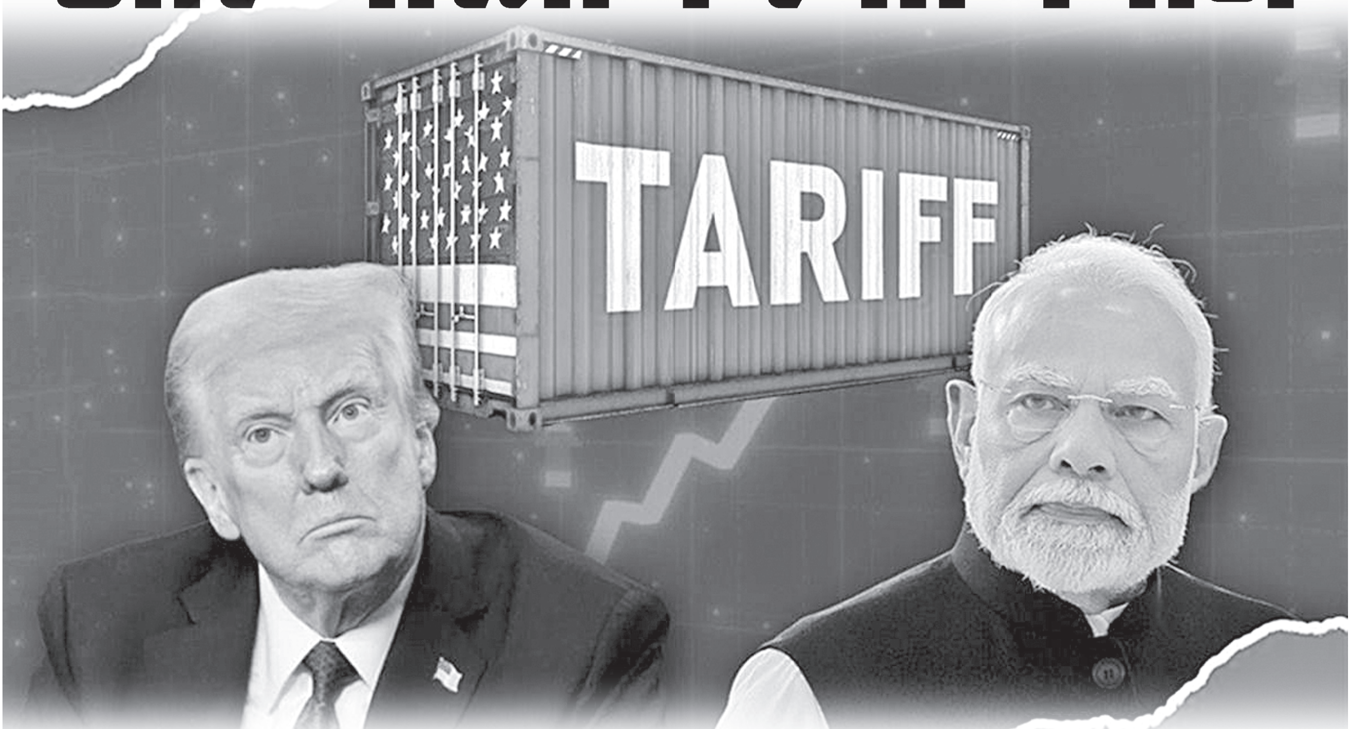

-डॉ. प्रभात कुमार

पिछले दो दशकों में भारत-अमेरिका संबंधों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। शीत युद्ध के दौर की अविश्वास की दीवारों को तोड़ते हुए दोनों देशों ने रक्षा समझौतों, तकनीकी सहयोग और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से रिश्तों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। यह संबंध रणनीतिक सहयोग, आर्थिक भागीदारी और तकनीकी नवाचार पर आधारित रहे हैं, जिसमें रक्षा, ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में गहरा सहयोग देखने को मिला है। बढ़ते व्यापार और निवेश ने इन द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत किया है। चीन की तुलना में भारतीय युवाओं के लिए अमेरिका अक्सर सबसे भरोसेमंद वैश्विक साझेदार माना जाता रहा है, लेकिन ट्रंप के पुनः राष्ट्रपति बनने के बाद उनके व्यापारिक रणनीति ने न केवल वैश्विक स्तर पर चिंता बढ़ाई वरन भारत से आने वाले सामान पर भी ट्रंप द्वारा लगाए गए 50% टैरिफ,जो 27 अगस्त से प्रभावी हो गए हैं, ने इस महत्वपूर्ण साझेदारी पर अनिश्चितता की छाया डाल दी है।

अमेरिका भारत पर दबाव डाल रहा है कि वह अमेरिकी उत्पादों जैसे डेयरी, पोल्ट्री, मक्का, सोयाबीन, चावल, गेहूं, एथेनॉल, फल और मेवे के लिए अपने बाजार खोले। भारत अमेरिकी सूखे मेवों और सेबों के लिए अधिक पहुंच प्रदान करने को तैयार है, लेकिन मक्का, सोयाबीन, गेहूं और डेयरी उत्पादों पर रोक बनाए हुए है। इस प्रतिरोध का एक प्रमुख कारण यह है कि अमेरिका में उगाई जाने वाली अधिकांश मक्का और सोयाबीन की फसलें जेनेटिकली मॉडिफाइड (जीएम) होती हैं, और भारत जीएम खाद्य फसलों के आयात की अनुमति नहीं देता। जीएम फसलों की तरह डेयरी भी एक अत्यधिक संवेदनशील मुद्दा है, क्योंकि यह लाखों किसानों को आजीविका प्रदान करता है, जिनमें कई भूमिहीन या लघु किसान हैं। और भारत के लिए कृषि क्षेत्र पर लिया कोई भी निर्णय अति संवेदनशील है।

हालाँकि भारत की लगभग 3.9 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में कृषि का हिस्सा केवल 16% है, फिर भी यह देश की 1.4 अरब आबादी के लगभग आधे लोगों के लिए जीवनरेखा है। सत्ता में बैठे लोगों को डर है कि सस्ते अमेरिकी आयात की बाढ़ स्थानीय कीमतों को नीचे ला सकती है और विपक्षी दलों को सरकार पर हमला तेज करने का

मौका दे सकती है। नई दिल्ली को यह भी चिंता है कि अमेरिका के साथ एक व्यापार समझौता इसे अन्य देशों के लिए भी अपने कृषि क्षेत्र को खोलने के लिए मजबूर कर सकता है। इसके बावजूद 'ग्लोबल गांव' के अपने संकल्प के प्रति निष्ठा दिखाने का दबाव भी मायने रखता है।

खेती के पैमाने में भारी असमानता भारतीय किसानों के लिए अपने अमेरिकी समकक्षों से प्रतिस्पर्धा करना कठिन बना देती है। भारत में औसत खेत का आकार मात्र 1.08 हेक्टेयर (2.67 एकड़) है, जबकि अमेरिका में यह 187 हेक्टेयर तक पहुँचता है। डेयरी खेती में यह अंतर और भी स्पष्ट है, जहाँ भारतीय किसान केवल दो या तीन जानवरों के छोटे झुंड पर निर्भर रहते हैं, जबकि अमेरिकी किसान सैकड़ों या उससे अधिक पशुओं का पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त, कई भारतीय किसान अभी भी पारंपरिक और गैर-यांत्रिक तकनीकों का उपयोग करते हैं, जबकि अमेरिकी कृषि अत्यधिक कुशल, तकनीक-चालित और आधुनिक उद्योग में विकसित हो चुकी है। ऐसी स्थिति में यह एक तरफा स्पर्धा होगी जिसमे नुकसान स्पष्ट रूप से भारतीय किसानों का व्यापारियों का और अर्थव्यवस्था का होगा।

भारतीय सरकार का अनुमान है कि इन टैरिफ शुल्कों का असर 48.2 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात पर पड़ेगा, जिससे रोजगार में कमी और आर्थिक विकास की गति धीमी हो सकती है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के अनुसार, भारत के वस्त्र, चमड़े के उत्पाद, रत्न और आभूषण, खाद्य उत्पादों तथा ऑटोमोबाइल के निर्यात को 50% अमेरिकी टैरिफ से सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। अमेरिका ने अपने इस कदम को भारत की ओर से रूसी तेल की खरीद से जोड़ा है, लेकिन भारत में इसे एक आर्थिक निर्णय के बजाय राजनीतिक दबाव की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति एवं उनके सलाहकारों का आक्रामक बयानबाज़ी भरा रवैया, जिसमें भारतीय बाज़ार खोलने और रूसी तेल खरीद को रोकने की बातें शामिल हैं, भारत में एक शत्रुतापूर्ण अभियान की तरह देखा जा रहा है, न कि रचनात्मक कूटनीति की तरह। ऐसा भी कहा जा रहा है कि पीएम नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पाकिस्तान के साथ युद्धविराम के झूठ और सालों से पल रहे उनके नोबेल शांति पुरस्कार के सपने का समर्थन करने से साफ इन्कार कर दिया और पीएम मोदी के इस कदम से नाराज होकर ही ट्रंप ने भारत पर भारी भरकम टैरिफ लगाया है।

भारत आज दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और ऊर्जा सुरक्षा उसके लिए जीवनरेखा के समान है। बढ़ती जनसंख्या, तीव्र औद्योगिकीकरण और विकासशील अर्थव्यवस्था की मांग है कि ऊर्जा का निरंतर और सस्ता स्रोत उपलब्ध रहे। रूस से तेल आयात करना भारत की इसी आवश्यकता का परिणाम है। यह कोई राजनीतिक पक्षधरता नहीं बल्कि आर्थिक विवशता और रणनीतिक सोच का हिस्सा है। अमेरिका यदि इसे रूसी खेमे का समर्थन मानता है तो यह एक गहरी गलतफहमी है। और इसका सबूत जाहिर तौर पर भारत ने रूस- युक्रेन युद्ध में रूस का पक्ष ना लेकर दिया है, जब भी यूनाइटेड नेशन द्वारा या अन्य वैश्विक पटल पर भारत से उसका रुख पूछा गया है भारत ने स्पष्ट रूप से मानवीयता को प्राथमिकता दे कर किसी भी देश के पक्ष में खड़ा होने से साफ मना कर दिया। भारत के इस रवैये ने गुट निरपेक्षता के अपने फैसले को भी सही साबित किया है।

ट्रम्प ने भारत पर दंडात्मक शुल्क लगाकर पिछले दो दशकों में बड़ी मेहनत से बने भरोसेमंद रिश्तों को झटका दिया है। भारत के साथ अमेरिका के रिश्तों में नरमी बराक ओबामा के कार्य काल में कई मायनों में सुधरी थी जिसमे अनेक चढ़ाव- उतार के बाद भी उत्तरोत्तर वृद्धि ही देखी गयी लेकिन हालिया घटनाओं ने फिर से उनके विदेश नीति दृष्टिकोण में विरोधाभास को उजागर किया है। वे भारत पर दंड लगाते हैं जबकि खुद रूस के साथ न केवल यूक्रेन संघर्ष सुलझाने बल्कि परमाणु निरस्त्रीकरण, आर्कटिक में सहयोग और कुछ आर्थिक साझेदारी पर भी वार्ता कर रहे हैं। इतना ही नहीं, चीन रूसी ऊर्जा (तेल और गैस) का सबसे बड़ा ख़रीदार है, लेकिन ट्रंप ने उस पर आर्थिक प्रतिबंध नहीं लगाया। यूरोपीय संघ रूसी थ्ज का सबसे बड़ा खरीदार है और तुर्की रूसी परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का, लेकिन दोनों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया। खुद अमेरिका भारत से परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद खरीदता

है जो रूसी कच्चे तेल से बने होते हैं, और रूस से आवश्यक धातुएँ भी आयात करता है।

इससे भारत में यह धारणा और मजबूत हो गई है कि टैरिफ का मकसद वास्तविक आर्थिक तर्क नहीं बल्कि दबाव डालना है। यही कारण है कि भारत में यह मुद्दा राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक बन गया है। व्यापारी वर्ग से लेकर आम नागरिक तक यह मानते हैं कि किसी भी महाशक्ति के दबाव में आकर नीतिगत निर्णय लेना देश की संप्रभुता से समझौता होगा। और विश्व इस बात का साक्षी है की जब जब भारत पर ऐसे दबाव बने हैं तब तब उसने गुट निरपेक्षता का मार्ग अपनाया है और अपनी संप्रभुता अखंड रखी है।

आज भारत में छोटे और मध्यम उद्योग भी यह कहने लगे हैं कि देश को वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखलाएं तलाशनी चाहिए और अमेरिका पर अपनी निर्भरता घटानी चाहिए। भारत के लिए अब यह केवल आर्थिक प्रश्न ही नहीं है अपितु आत्मसम्मान का विषय बन गया है। एक सभ्यतागत राष्ट्र होने के नाते भारत अपने निर्णय स्वतंत्र रूप से लेने का अधिकारी है। अमेरिका यदि 20वीं सदी की तरह दबाव डालकर सहयोग चाहता है तो यह संभव नहीं है। बहुध्रुवीय विश्व में साझेदारी का आधार बराबरी और पारस्परिक सम्मान है।

इस पूरे प्रकरण का असर घरेलू राजनीति और जनमानस पर भी पड़ रहा है। भारत में यह भावना प्रबल हो रही है कि देश को अपनी राह खुद बनानी होगी। जो शुरुआत में एक व्यापारिक विवाद था, वह अब भारत के लिए राष्ट्रीय गर्व और संप्रभुता का सवाल बन चुका है। आत्मनिर्भरता, वैकल्पिक बाजारों की तलाश और स्वदेशी उत्पादन की दिशा में प्रयास भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत ही जरूरी हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी अपने भाषणों में निरंतर देशवासियों से स्वदेशी और वोकल फ़ॉर लोकल के मंत्र को अपनाने के लिए कह रहे हैं।

ऐसे समय में जब ट्रंप भारत को निशाना बना रहे हैं, यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि भारत अमेरिका से दूरी बना सकता है और अपने लिए वैकल्पिक रास्ते तलाश सकता है। प्रधानमंत्री मोदी की हाल ही में संपन्न हुई जापान यात्रा को इसी संदर्भ में देखा जा रहा है। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू जापान द्वारा भारत में अगले 10 वर्षों में 10 खरब येन (लगभग 6 लाख करोड़ रुपये) के निवेश की घोषणा रहा। इसके अतिरिक्त रक्षा, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, अंतरिक्ष सहित विभिन्न क्षेत्रों में 13 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।

कुछ समय पहले ही भारत और यूनाइटेड किंगडम ने तीन वर्षों की बातचीत के बाद एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर सहमति व्यक्त की, जिसका उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार को वर्तमान लगभग 60 अरब डॉलर से बढ़ाकर 2030 तक 120 अरब डॉलर करना है।

इसके अलावा इसी सप्ताह उत्तरी चीन के तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का 25वाँ शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें प्रधानमंत्री मोदी चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रुस के राष्ट्रपति पुतिन से मिले। पीएम मोदी की यह यात्रा खास मायनों में महत्वपूर्ण है. चीनी विदेश मंत्री वांग यी हाल ही में भारत आए थे और उन्होंने कहा था कि भारत और चीन को एक-दूसरे को को प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि पार्टनर मानना चाहिए। भारत का चीन एवं रुस की ओर झुकाव अमेरिका की इंडो-पैसिफ़िक रणनीति को कमजोर करेगा एवं एक नए वर्ल्ड ऑर्डर को जन्म देगा।

अमेरिका को यह समझना होगा कि भारत अब केवल एक विकासशील राष्ट्र नहीं, बल्कि एक उभरती हुई शक्ति है। उसका सहयोग तभी संभव है जब उसे बराबरी का दर्जा और सम्मान मिले। टैरिफ और दंडात्मक कदम सहयोग को मजबूत करने के बजाय अविश्वास ही बढ़ाते हैं। यदि अमेरिका सचमुच भारत को रणनीतिक साझेदार मानता है, तो उसे भारत की ऊर्जा जरूरतों और स्वाभिमान का सम्मान करना होगा।

'रूसी तेल, अमेरिकी टैरिफ और भारतीय स्वाभिमान' का यह प्रसंग हमें यही सिखाता है कि वैश्विक राजनीति में अब दबाव की जगह संवाद और सहयोग की आवश्यकता है। भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि उसकी प्राथमिकता उसका राष्ट्रीय हित है और वह किसी भी कीमत पर स्वाभिमान से समझौता नहीं करेगा। दुनिया को भी यह मान लेना चाहिए कि 21वीं सदी का भारत अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है और वह सम्मानजनक साझेदारी के लिए हमेशा तैयार है, परंतु दबाव में झुकने वाला नहीं। ●

धर्म की आड़ में मजदूरों का सफाया

–शम्सुल इस्लाम

पश्चिम बंगाल के प्रवासी भारतीय मुसलमानों पर हो रहे क्रूर दमन के हम मूक दर्शक बने हुए हैं, कुछ नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें दिन में ही नहीं, पूरी रात सादे कपड़ों में लोग (अक्सर गाली-गलौज करते हुए, सवाल पूछने पर मार, कोई नहीं बता सकता कि ये पुलिस है या बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद के लफंगे) घरों और सड़कों से उठाते हैं और गुड़गांव के विभिन्न पुलिस थानों में ले जाते हैं।

मेरी पत्नी नीलिमा शर्मा और मैं ने जीवन में कभी इतना असहाय और शर्मिंदा महसूस नहीं किया जितना हम पिछले लगभग 20 दिनों से गुड़गांव में कर रहे हैं 1 एक ऐसा शहर जिस को हमने स्थायी रिहाइश के लिए इस कारण चुना था कि 1857 में जिस एक जगह हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों ने मिलकर सब से ज्यादा कुर्बानियां दी थीं, वह यही जगह थी। इस शहर में यह सब होगा, डरावने सपने में भी नहीं आया था।

पश्चिम बंगाल के प्रवासी भारतीय मुसलमानों पर हो रहे क्रूर दमन के हम मूक दर्शक बने हुए हैं, कुछ नहीं कर पा रहे हैं उन्हें दिन में ही नहीं, पूरी रात सादे कपड़ों में लोग (अक्सर गाली-गलौज करते हुए, सवाल पूछने पर मार, कोई नहीं बता सकता कि ये पुलिस है या बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद के लफंगे) घरों और सड़कों से उठाते हैं और गुड़गांव के विभिन्न पुलिस थानों में ले जाते हैं। उन्हें अवैध प्रवासी होने के आरोप में उठाया जा रहा है। पीड़ितों ने आरोप लगाया है कि कागज मांगने से पहले ही, उन्हें घंटों बेरहमी से पीटा गया और फिर एक या एक से ज्यादा पुलिस थानों में ले जाकर अराजक न्याय की और खुराकें दी गई। नौजवान लड़कों की किस बर्बरता से खालें उधेड़ी गई हैं उन्हें देखना

बड़े दिल - गुर्दे का काम है। जहां-जहां मारा गया वहां मारने का एक यंत्र रबर - प्लास्टिक के डंडे, ऐस से थे। ये इल्जाम भी लगाया गया है कि कुछ लोगों को 'इलेक्ट्रिक शॉक' (बिजली के झटके) भी दिए गए। पिटाई करने वालों का एक और कर्म साझा था और वह था यह डायलॉग : 'यहां ममता दीदी का राज नहीं है, मोदी का राज है।'

बहुत से लोगों को ऐसी 'कीमत' चुकाकर रिहा किया गया है जिसका कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता क्योंकि पीड़ित इसके बारे में बिल्कुल बात नहीं करना चाहते हैं। शिकायत करने के क्या परिणाम हो सकते हैं इसलिए चुप रहने में ही भलाई है। लेकिन इंसाफ पसंद लोगों ने इस का भंडाफोड़ किया है। हिंदुस्तान टाइम्स में छपी 26 जुलाई की रपट के अनुसार, 'सेक्टर

48 स्थित बेलेव्यू सेंट्रल पार्क-2 के अध्यक्ष प्रभात भारद्वाज ने कहा, 'हमारे घरेलू सहायक के परिवार को कथित तौर पर उठाकर पीटा गया। उन्हें जाने देने के लिए रु. 10,000 का जुर्माना भी भरना पड़ा'।'

की महिलाओं की हालत देखने और शर्मसार करने लायक थी। पुलिस के अनुसार, आधार और वोटिंग कार्ड, जो अब भारतीय नागरिकता साबित करने के लिए 'कानूनी' दस्तावेज नहीं हैं, बंदियों को अब अपनी भारतीय नागरिकता साबित करने के लिए दूसरे प्रमाण देने है !

मैंने 16 जुलाई, 2025 को पश्चिम बंगाल रेजिडेंट कमिश्नर (उज्जैनी दत्ता), डिप्टी रेजिडेंट कमिश्नर (राजदीप दत्ता) और सहायक सूचना निदेशक (आशीष जाना) को निम्नलिखित पत्र लिखा था, जिसकी प्रतिलिपि सभी पीयूसीएल और उनके पदाधिकारियों को भेजी गई थी। रेजिडेंट कमिश्नर के कार्यालय से कोई जवाब न मिलने पर, मैंने उनके कार्यालय फोन नंबरों पर संपर्क करने की कोशिश की लेकिन विफल रहा। यह लिखे जाने तक किसी ने कोई जवाब नहीं दिया है।

16 जुलाई, 2025 को अंग्रेजी में लिखे पत्र का हिंदी अनुवाद पेश हैः

नमस्कार !

मैं दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्राध्यापक हूं और वर्तमान में गुड़गांव में रहता हूं। लगभग एक पखवाड़े से स्थानीय पुलिस सादे कपड़ों में पश्चिम बंगाल के मुस्लिम युवकों को उनके घरों से उठाकर बेरहमी से पीट रही है और कह रही है कि यहां ममता का नहीं, मोदी का राज है। उनके माता-पिता- रिश्तेदारों को उनके ठिकाने के बारे में कुछ नहीं बताया जाता। उन्हें बुरी तरह पीटने के बाद वापस भेज दिया जाता है। कितने लापता हैं, कोई नहीं जानता।

कृपया आवश्यक कार्रवाई करें।

सादर,

शम्सुल इस्लाम

इसी बीच हमारे परिचित पीड़ितों से पता चला कि वे लोग पश्चिम बंगाल के जिस निर्वाचन क्षेत्र से हैं, उस का प्रतिनिधित्व तृणमूल कांग्रेस की विधायक रेखा राय करती हैं। हमें यह भी पता चला कि उनके पति नुकुल दादा उनके मामलों का प्रबंधन करते हैं। उनके नंबर पर किया गया। वह बहुत जल्दी में लग रहे थे, उन्होंने बीच में ही फोन काट दिया।

जब यह दर्दनाक हालत कोलकाता में जनस्वास्थ आंदोलन से जुड़े डॉ. फुआद हलीम को बताई तो उन्हों ने कोलकाता के ही कामरेड अशादुल्लाह गएन से संपर्क करा दिया जो देश भर में पश्चिमी बंगाल से गए प्रवासी मजदूरों के सीपीएम (मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी) से जुड़े संगठन के प्रमुख हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि जिन बंगाली मजदूरों को कागजात की जांच के लिए बंदी बनाया गया है, उन के सगे-संबंधी मुझ से संपर्क कर सकते हैं और उनका संगठन दस्तावेजों के सत्यापन के लिए उनके क्षेत्र जिला अधिकारी से तुरंत कार्यवाही के लिए पहल करेगा। ये जानकारी काफी मददगार साबित हुई लेकिन इस के लिए जहां पीड़ित कैद हैं वहां निम्नलिखित व्यवस्था की जानी चाहिये थी।

'हिरासत केंद्रों पर स्मार्ट फोन के साथ मददगार हमदर्द जो कागजी कार्यवाही कर सकें।

महिला हमदर्द जो परेशान महिलाओं को ढाढस बांदा सकें।

हमदर्द वकील।

ये काम वे संगठन कर सकते थे जिन का ऊपर जिक्र किया गया है जो बदकिस्मती से मदद करने के लिए किसी इस से ज्यादा शर्मनाक मौके का इंतजार कर रहे थे या वे स्वर्ग सिधार चुके थे !

शासकों के हिंदुस्तानी बंगाली मुसलमानों का गुड़गांव और पूरे हरियाणा में सफाया अभियान का और शर्मनाक पहलू यह है की इस्लाम और मुसलमानों की सेवा में लगे लगभग तमाम धार्मिक संगठनों ने इस मामले में बेरुखी अपनाए रखी। याद रहे शहर के ज्यादातर पीड़ित धर्मनिष्ठ मुसलमान हैं, पांचों वक्त के नमाजी, जो अपनी दरिद्रता के बावजूद बच्चों को मज़हबी तालीम दिलाने के लिए मिलकर किसी मौलवी हजरत को पारिश्रमिक देकर सेवाएं हासिल करते हैं। लेकिन भारतीय मुस्लिम संगठन, जो शरीयत, तीन तलाक और पर्दा प्रथा के समर्थन में आंदोलन करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, वे भी इन मुसलमानों पर ढाए जा रहे जुल्म के दौर में गायब हैं! इस बेरुखी की एक वजह यह हो सकती है कि पीड़ित मुसलमान निचली जातियों से आते हैं, यानी अजलाफ हैं।

कहां गए वो लोग

बंगाली मुसलमानों के साथ जो हुआ है और हो रहा है, उसके लिए और कई बड़ी हस्तियां भी मुजरिम हैं, जो आरएसएस-भाजपा शासक टोली का हिस्सा नहीं मानी जाती हैं। राज बब्बर (गुड़गांव से 2024 का संसदीय चुनाव लड़े), हरियाणा कांग्रेस नेतृत्व (विधानसभा में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी), और स्वराज अभियान के योगेंद्र यादव, जिन के स्वराज अभियान की स्थापना गुड़गांव में ही हुई थी और 2014 का संसदीय चुनाव भी उन्होंने यहीं से लड़ था। ये सब इस संकट के दौर में इस तरह गायब थे, और हैं, जैसे गधे के सर से सींग।

इसी शहर में बहुत सारे मशहूर मुसलमान स्थायी निवासी हैं, जो देश के ऊंचे संविधानिक पदों पर विराजमान रहे हैं, वे अगर गुड़गांव प्रशासन पर दबाव बनाते तो शायद जुल्म का इतना नंगा नाच ना होता। इसी शहर में राज्यसभा के एक भूतपूर्व सदस्य रहते हैं जिन्हों नेइंडियन मुस्लिम्स फॉर सिविल राइट्स के झंडे तले देश भर में सम्मेलन किए लेकिन गुड़गांव में यह 'दुकान' भी बंद मिली।

आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयं सेवक) के

सरकार, प्रशासन और नागरिक समाज में प्यादे हिंदुस्तानी बंगाली मुसलमानों की सफाई अभियान पर एक संयोजित ढंग से काम कर रहे थे। इस का अंदाजा इस सूचना से लगाया जा सकता है जो हमारी सोसाइटी के 'व्हाट्सप्प ग्रुप' में गत माह 13 जुलाई को प्रकट हुईः

' नोएडा की पॉश कालोनी महागुन सोसाइटी।

एक परिवार जिसके यहां एक बांग्लादेशी मुस्लिम महिला घरेलू नौकरानी का काम करती थी, उन्होंने नौकरानी से शक के आधार पर पिछले काफी दिनों से घर से गायब हो रही छुटपुट वस्तुओं और पिछले दिन गायब हुए दस हजार रुपए के विषय में पूछताछ की... पहले तो नौकरानी नं साफ मना कर दिया पर जब परिवार ने चोरी करते हुए उसकी सीसीटीवी रिकार्डिंग का सबूत अपने पास होने की बात कही तो उसने 10000 रुपए चोरी करना स्वीकार कर लिया...

और अगले दिन पैसे लेकर आने को कहकर अपने घर लौट गई...

परंतु परिवार ने यह बात सोसाइटी में बता दी पूरी सोसाइटी में पास की बांग्लादेशी बस्ती की बहुत सारी महिलाएं काम करती हैं पूरी सोसाइटी ने कल से उन्हें काम पर आने से मना कर दिया फलस्वरूप ....

आज 12 जुलाई को प्रातः छह बजे वह औरत अपने पास ही में बसी बांग्लादेशियों की बस्ती से सैंकड़ों लोगों की भीड़ लेकर महागुन सोसाइटी में पहुंचती है और भीड़ पूरी सोसाइटी में आतंक मचा देती है 'लूट लो मार दो' की आवाजें आने लगती हैं घरों और गाड़ियों में तोड़फोड़ शुरू हो जाती है...

बाकि आप वीडियो में देख सकते हैं

कुल मिलाकर अगर आप इस घटना से सबक लेते हैं तो अपने घरों से इन बांग्लादेशी और जेहादी तत्वों को निकालिए वर्ना दिन आप भी भुगतेंगे।

हम लोग ही इन्हें अपने घरों में घुसा हैं

देखें दोनों वीडियो।

इस पोस्ट में दो वीडियो, जिन का जिक्र है, भी लगे थे। यह भी पता लगा कि यह पोस्ट अलग-अलग लोगों के नाम से गुड़गांव और दिल्ली की बहुत सारी रिहायशी बस्तियों के 'व्हाट्सप्प ' समूहों में लगायी गई थी। पर इसके पीछे का सच जानकार कोई भी स्तब्ध रह जाएगा !

जिस घटना की बात की जा रही है वो 2017 की नोएडा की एक पॉश कालोनी 'महागुन सोसाइटी' की है। 2017 में ही पुलिस ने पुष्टि कर दी थी कि जिस महिला के बांग्लादेशी होने की अफवाह फेलाई जा रही है, 'जोहरा और उनके पति दोनों बंगाल के कूच बिहार के रहने वाले हैं और एक दशक से भी ज्यादा समय से नोएडा में रह रहे हैं। पुलिस के अधिकारियों ने इस बा को खारिज कर दिया कि वह अवैध बाग्लादेशी प्रवासी हैं। पुलिस ने यह भी बताया कि दोनों के पास आधार कार्ड समेत वैध पहचान पत्र भी हैं।'

जहां तक चोरी करने की बात है पुलिस ने बताया कि हमारे पास दो शिकायतें हैं, एक घर के मालिक की ओर से जोहरा के विरुद्ध चोरी की रपट और दूसरी जोहरा की ओर से कि उस की पगार नहीं दी गई और जब उसने मांगी तो कमरे में बंद कर दिया। पुलिस ने बताया की दोनों शिकायतों की तहकीकत की जा रही है।

जालसाजी का प्रमाण

इस पोस्ट की एक बड़ी जालसाजी यह थी कि जो दो वीडियो बांग्लादेशियों के हमले के सबूत के तौर पर पेश किए गए थे वे 2022 के एक ऐसी सोसाइटी के थे जहां सुरक्षा कर्मियों के दो गुटों में बलवा हुआ था। हम ने कोशिश की कि इस पर कानूनी कार्रवाई हो, लेकिन कुछ न हो सका, क्यों कि जिस नागरिक अधिकार संगठन से निवेदन किया गया था उसने इसे कोई बड़ा मुद्दा नहीं माना।

यह सच है कि जुलाई के अंत तक कुछ हमदर्द लोगों के संदेश आने लगे और कुछ संगठन पीड़ितों का दुखड़ा सुनने गुड़गांव आने लगे। काफी देर हो चुकी थी, अगर यही हस्तक्षेप 20 दिन पहले हो जाता तो पीड़ितों को ढाढ़स बंधता, जुल्म कुछ कम होता और बंगाली मुसलमान आम पलायन के बारे में नहीं सोचते।

25 जुलाई, को, सीपीआई (एमएल) के महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य ने राजनीतिक कार्यकर्ताओं, वकीलों, पत्रकारों और चिंतित नागरिकों के एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए गुरुग्राम का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने डिटेंशन सेंटर्स का निरीक्षण किया, प्रभावित मजदूरों और संबंधित अधिकारियों से मुलाकात की।

इस दौरे की एक रपट जारी कि गई जिस में बताया गया कि हालांकि नागरिक समाज, प्रगतिशील मीडिया और राजनीतिक नेताओं के दबाव के चलते बंदियों को रिहा किया गया, लेकिन अधिकारियों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि 'विदेशी' की पहचान किए जाने का आधार क्या था। डीसीपी कार्यालय में यह पुष्टि की गई कि गृह मंत्रालय के निर्देश पर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में यह प्रक्रिया शुरू की गई थी, जो कि इस तरह की पहली कार्रवाई थी।

लेकिन यह आदेश न तो सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध है और न ही डीसीपी कार्यालय ने इसे प्रतिनिधिमंडल के साथ साझा किया। अधिकारियों ने इस प्रक्रिया के कानूनी आधार या इसके लिए अपनाई ई मानक संचालन प्रक्रिया के बारे में कोई स्पष्ट और संतोषजनक जानकारी नहीं दी।

मजदूरों से बातचीत में प्रतिनिधिमंडल को यह पता चला कि अधिकांश गिरफ्तारियां सादे कपड़ों में आए लोगों द्वारा की गईं, जो स्वयं को पुलिसकर्मी बता रहे थे, लेकिन उनके पास कोई पहचान पत्र कागजात नहीं थे, और वे बिना नंबर की गाड़ियों में आए थे। विभिन्न इलाकों से कई लोगों को उठा कर अलग-अलग 'डिटेंशन' या

'होल्डिंग सेंटर्स' में ले जाया गया।

उन्हें नागरिकता साबित करने को कहा गया, लेकिन आधार कार्ड, वोटर आईडी, राशन कार्ड, पैन कार्ड आदि को पर्याप्त नहीं माना गया। कुछ को एक हफ्ते तक थानों में रखा गया, और इस दौरान पुलिस प्रताड़ना, शारीरिक हिंसा तथा यह कहने के लिए दबाव दिया गया कि उनकी बस्ती के कुछ लोग 'बांग्लादेशी' हैं, ताकि वे रिहा हो सकें।

यह भी बताया गया कि प्रशासन संदिग्ध लोगों की पहचान मनमाने ढंग से कर रहा है जैसे बंगाली बोलना, मुस्लिम नाम होना, या मजदूर बस्ती में रहना। जब अधिकारियों से प्रक्रिया के बारे में सवाल किया गया तो उनका पूर्वग्रह और भेदभावपूर्ण रुख स्पष्ट था। सेक्टर 49 के बंगाली बाजार में मजदूरों ने बताया कि पुलिस ने उन्हें एक जुलाई तक का समय दिया था, उसके बाद डिटेंशन की धमकी दी गई थी।

27 जुलाई को मशहूर नागरिक अधिकार

ऐक्टिविस्ट, नदीम खान जो 'यूनाइटेड अगेंस्ट हेट' (घृणा के खिलाफ एकजुटता) के संस्थापक हैं और 'एसोसिएशन ऑफ सिविल राइट्स' (नागरिक अधिकार संरक्षण संगठन) के मुखिया ने गुड़गांव का दौरा किया और बताया:

'मैं पिछले दो दिनों से गुड़गांव में हूं, और मेरी टीम शुक्रवार को भी यहां थी। गुड़गांव में लगभग दो लाख बंगाली भाषी मुसलमान हैं, जिन्हें निशाना बनाया जा रहा है, खासकर चक्करपुर, बादशाहपुर और सेक्टर 49 में। अकेले सेक्टर 49 में 15,000 निवासी थे, लेकिन अब केवल कुछ सौ ही बचे हैं - लोग या तो चले गए हैं या जाने का इंतजार कर रहे हैं।

बंगाल सरकार की चुप्पी

'फिलहाल, किसी को हिरासत में नहीं लिया गया है, लेकिन पुलिस की बर्बरता ने समुदाय को भयभीत कर दिया है। पहले दिन, मैंने अजित अंजुम के साथ एक साक्षात्कार की व्यवस्था की और कल रैड माइक' के साथ समन्वय किया, लेकिन मूल मुद्दा अभी भी बना हुआ है– कोई भी अदालत जाने को तैयार नहीं है, जिससे स्थिति बेकाबू होती जा रही है। आज भी, नजरबंदी से रिहा हुए लोगों से अदालत जाने को कहा गया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। सबसे बड़ी निराशा बंगाल सरकार की चुप्पी रही है। लोगों ने महुआ मोइत्रा समेत कई नेताओं को फोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। हर्ष मंदर और मैं परसों कोलकाता जा रहे हैं और इस पूरे मुद्दे पर एक प्रेस कान्फ्रेंस करेंगे।'

यह दावा करना कि 'नागरिक समाज, प्रगतिशील मीडिया और राजनीतिक नेताओं के दबाव के चलते बंदियों को रिहा किया गया' और ' फिलहाल किसी को हिरासत में नहीं लिया गया' को अतिशयोक्ति ही कहा जा सकता है। फिलहाल हरियाणा सरकार और पुलिस की खुली गुंडागर्दी को इस लिए लगाम लगी है क्यों की जिन बंगाली मुसलमानों की व्यापक गैर-कानूनी गिरफ्तारियों और उन पर बर्बर दमन ने उन्हें आम पलायन के लिए मजबूर कर दिया है, वे ऐसे लाखों लोग थे जो इस शहर की गंदगी को ढोकर दूर 'कूड़ा डलाओ' तक ले जाते थे, 100 से 200 रुपए रोज पर। इनकी औरतें अमीरों और मध्य वर्ग के लाखों घरों में, हर दिन औसतन 3-4 घरों में, कम से कम दो बार झाड़ू-पोंछा और शौचालयों को साफ करती थीं (जिनका प्रयोग इनके लिए वर्जित ही), 2000 से 3000 रूपों के प्रति महीना वेतन पर।

कौमी और धार्मिक त्योहारों पर अवकाश सब निवासियों के लिए होते, इनके लिए नहीं, क्यों की त्योहारों पर तो मेहमान आते हैं, 'बाई' को छुट्टी कैसे दी जा सकती है! महीना तो छोड़िये साल में कितने अवकाश होंगे उस की जानकारी कम से कम नौकरानी को तो नहीं होती है!

इनके जाने पर हिंदुत्ववादी टोली के शिकंजे में फंसे शहर का क्या हाल हुआ, उस के बारे में देश के एक प्रमुख अंग्रेजी अखबार हिंदुस्तान टाइम्स, जुलाई 26, की यह रपट बहुत कुछ बता देती हैः

'गुरुग्राम में एक नागरिक और मानवीय संकट चुपचाप सामने आ रहा है। इसके आलीशान अपार्टमेंट और फाटक लगी कालोनियों में, ये निशान हर जगह दिखाई देते हैंः बिना इकट्ठा किया गया कचरा, बदबूदार गलियारे, और घर के काम निपटाने में जुटे परिवार। पिछले हफ्ते, सैकड़ों सफाई कर्मचारी, घरेलू नौकर और दिहाड़ी मजदूर, जिनमें से कई पश्चिम बंगाल और असम से आए प्रवासी हैं, बांग्लादेश से आए कथित अवैध प्रवासियों को निशाना बनाकर पुलिस द्वारा चलाए जा रहे सत्यापन अभियान के बीच शहर छोड़कर चले गए हैं... उत्पीड़न और मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने के डर से, कई लोग रातोंरात अपना सामान बांधकर चले गए, जिससे प्रमुख नागरिक सेवाएं बाधित हुईं और 'रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन' (आरडब्ल्यूए) तथा गुरुग्राम नगर निगम (एमसीजी) दोनों संकट की स्थिति में पहुंच गए।'

गुड़गांव में जो कुछ हो रहा है, वह कल्पना से परे है। कई तिपहिया वाहन चालकों को, यात्रियों को ले जाते समय ही, उठा लिया गया। किसी को नहीं पता कि वाहन कहां हैं। एक और बात यह है कि पश्चिम बंगाल सरकार बंगाली मुसलमानों के लिए एक दस्तावेज जारी कर रही है कि वाहन चालक भारतीय नागरिक हैं, जिसके आधार पर वह व्यक्ति हरियाणा में काम कर सकता है। यह भारत के उत्तर-पूर्व के इलाकों में जाने के लिए जारी किए जाने वाले 'इनर लाइन परमिट' जैसा लगता है। इसलिए पश्चिम बंगाल के मुसलमान रंगभेदी शासन के अधीन रहने वाले हैं 1

हिंदी का अमृत महोत्सव आनेवाला है!

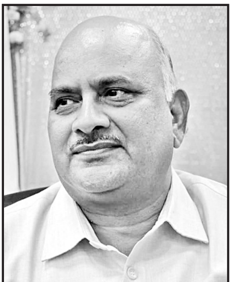

गोपाल जी राय
लेखक व विचारक

हिंदी भाषा का यह संघर्ष काल है। क्योंकि यह भाषा राष्ट्र भाषा बने, इसको लेकर भारत के अन्य भाषा भाषी ही गर्म हैं। विदेशी भाषा अंग्रेजी और विदेशी भाषी अंग्रेजों की कुत्सित चाल भी है यह, हालांकि, हिंदी भाषा साहित्य में अमृत का समृद्ध वर्णन उपलब्ध है। इसलिए हिंदी प्रेमी यदि सजग रहे तो अमृत महोत्सव आते देर नहीं लगेगी। खासकर मौजूदा सरकार के रहते। यह पहली सरकार है जिसने राजकाज की भाषा में हिंदी को प्रथम वरीयता दी है, द्वितीय नहीं! हां, हिंदी से जिन्हें सौतिया डाह है, उनको इस स्थिति से निजात दिलाने में तो वक्त लगेगा ही।

निःसंदेह, हिंदी वह भारतीय भाषा है जो उसकी सबसे बड़ी आबादी द्वारा बोली जाती है। इसकी जड़ देवभाषा संस्कृत और उसकी लिपि देवनागरी से जुड़ी हुई है। यह राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बन पाई, यह विचारणीय पहलू है। यक्ष प्रश्न यह है कि भले ही उसे भारत में राजभाषा का दर्जा दे दिया गया हो, 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस पर देश-विदेश में व्यापक आयोजन होता हो, फिर भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने जैसे अहम सवाल पर जिम्मेदार लोग अक्सर चुप्पी साध लेते हैं, या फिर इधर उधर की अप्रासंगिक दलीलें देते हैं, जो अनुचित है। यह कड़वी सच्चाई है कि हिंदी को जितना दबाया गया, उतनी ही वह ऊपर उठती चली गई। उसने भाषाई रजत ,स्वर्ण सभी समारोह मना लिए, बस अमृत महोत्सव आना बाकी है।

यह कितनी अजीबोगरीब बात है कि अंग्रेजी मानसिकता वाले लोग भारत में ही उसकी सबसे बड़ी जनभाषा हिंदी को दबाने के लिए क्षेत्रीय भाषा-भाषियों से इसकी होड़ मचवाते हैं और क्षेत्रीय नेताओं व लोगों को हिंदी के खिलाफ भड़काते हैं। इसे राजनैतिक मुद्दा बनवाते हैं, जिससे बचे जाने अन्यथा केंद्र सरकार द्वारा ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करवाने की जरूरत है। क्योंकि ऐसे लोगों की अवांछित गतिविधियों से कहीं न कहीं राष्ट्रीय एकता व

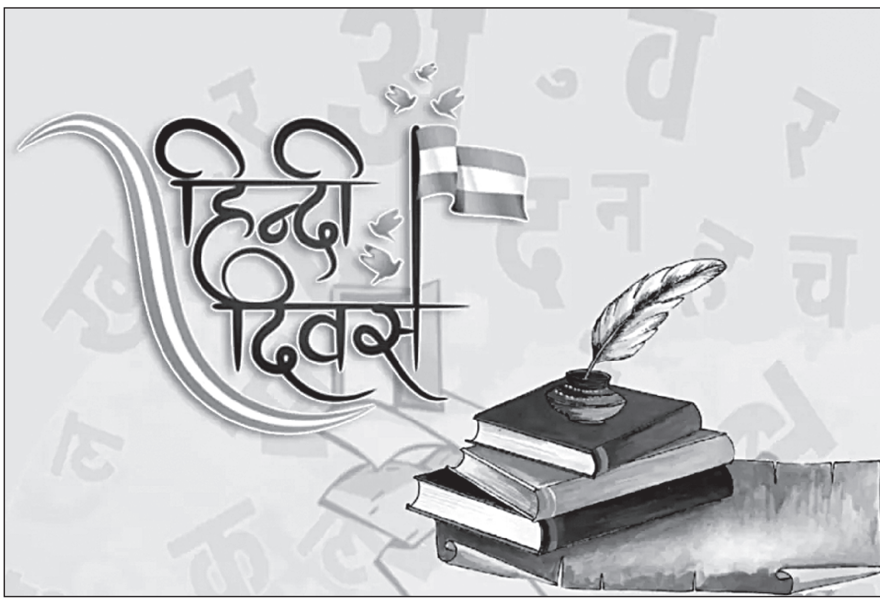

अखंडता पर नकारात्मक असर पड़ता है। सुकून की बात यह है कि जाने-अनजाने हिंदी का प्रचार प्रसार न केवल गैर हिंदी भाषी राज्यों में बढ़ रहा है, बल्कि विदेशों में भी इसकी पूछ में इजाफा हो रहा है। ऐसा इसलिए कि दुनिया में भारत एक महाशक्ति बनने की राह पर अग्रसर है। इसका स्पष्ट असर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता पर भी दिखाई दे रहा है। वाकई जिस तरह से दुनिया भर के देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है, भारत को समझने-समझाने के लिए हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, उसके लिहाज से हिंदी सीखना विदेशियों के लिए एक जरूरत बनता जा रहा है।

विदेशी भाषा-भाषियों द्वारा हिंदी सीखने की ललक से गैर हिंदी भाषी राज्यों के युवाओं पर भी इसका सकारात्मक असर पड़ रहा है। यही वजह है कि हिंदी के विस्तार को थामने के लिए अंग्रेजी भाषा-भाषी लोगों ने भारत के क्षेत्रीय भाषाओं खासकर दक्षिण भारतीय भाषाओं से जो इसकी होड़ लगवाई, अब उन्हें निराशा हाथ लगी है। क्योंकि भारत एक बड़ी आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहा है। इसमें हिंदी भाषा के योगदान से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

जानकारों के मुताबिक, भारत में हो रहे आर्थिक विकास का असर हिंदी के विकास के रूप में भी विदेशों में दिख रहा है। जैसे-जैसे विदेशों की कंपनियां भारत में लोकप्रिय हो रही हैं, वैसे-वैसे हिंदी के प्रति भी वहां के लोगों का झुकाव बढ़ रहा है। उदाहरणतया, दक्षिण कोरिया जैसे देश में में रहने वाले युवा तो भारत में लोकप्रिय हुंडई व सैमसंग जैसी कंपनियों में काम करने के लिए हिंदी जानने-समझने की पहल की है।

इसी तरह भारत के मित्र देशों के युवाओं ने भी हिंदी के प्रति अपनी रुचि बढ़ाई है, ताकि दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों को और मजबूती मिले। इसके लिए उनकी सरकारें भी उन्हें प्रोत्साहित करती रहती हैं। यदि सिंगापुर की सरकार की नीतियों की बात करें, तो यह मानना पड़ेगा कि उनकी नीतियों की वजह से ही यहां हिंदी का प्रचार-प्रसार बहुत हुआ है।

कहना न होगा कि हिंदी के क्षेत्रीय व वैश्विक विस्तार में हिंदी फिल्मों का भी बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय इतिहास, संस्कृति, अध्यात्म, लोक परंपरा, ज्ञान-विज्ञान और रीति-रिवाज और जनतांत्रिक प्रशासन के जिन विभिन्न पहलुओं को इन फिल्मों में दर्शाया गया है, उससे विदेशों में हिंदी का प्रसार प्रसार प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से होता गया। आप यह जानकर हैरत में पड़ जाएंगे कि 3 इडियट और दंगल जैसी हिट हिंदी फिल्में न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी काफी लोकप्रियता पाई थीं। यह तो महज बानगी है, विस्तार से बताने को बहुत कुछ है। आलम यह है कि विदेशों में वहां की प्रचलित भाषा के सबटाइटल के साथ हिंदी फिल्में लगाई जाती हैं।

देखा जाए तो बॉलीवुड ने भी हिंदी का प्रचार किया है। दिलचस्प यह है कि ऑस्ट्रेलिया में कोई हिंदी फिल्मों में काम करने के लिए हिंदी सीखना चाहता है, तो कोई योगा को समझने के लिए, और तो और, कोई भारत को ही समझने के लिए हिंदी सीखना चाहता है। क्योंकि उन्हें लगता है कि यदि भारत को जानना हो तो हिंदी आनी ही चाहिए। वहां का एक लड़का गोवा में रिजॉर्ट खोलना चाहता था, इसलिए हिंदी सीख रहा था। इसलिए इस बात में कोई शक नहीं कि विदेशों में हिंदी के विकास का श्रेय भारतीय फिल्मों को भी जाता है।

विदेशों में युवा अपनी मां की प्रेरणा से भी हिंदी सीखते पाए जाते हैं, क्योंकि अंतरजातीय व अंतर्धार्मिक विवाह के बढ़ते प्रचलन से लाखों भारतीय युवतियों ने विदेशियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किये और अपने सगे-सम्बन्धियों और बच्चों को हिंदी भी सीखने के लिये उत्प्रेरित किया है और कर रही हैं। उनकी स्पष्ट सोच रहती है कि विदेशों की स्थानीय संस्कृति के प्रति आपके मन में सम्मान का भाव हो, उसे जानने समझने की आपकी, आपके मन में जिज्ञासा हो। लेकिन यदि हम अपनी स्वयं की संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव नहीं रखेंगे तो कोई हमारे प्रति सम्मान का भाव नहीं रखेगा। आपकी सारी पहचान अपनी भाषा-संस्कृति को बचाये व बढ़ाए रखने में ही है, यह बात प्रबुद्ध लोग भी जानते समझते हैं।

यदि हम फिजी में हिंदी भाषा की शुरुआत संपर्क भाषा के रूप में होने की बात करें तो वहां इसकी शुरुआत तब हुई जब लगभग 142 वर्ष पहले भारत से लोग गिरमिटिया मजदूर बनकर वहां गए और अपनी हिंदी व इससे मिलती जुलती भाषा को वहां प्रचलित किया। अब वहां के नागरिक बन चुके अप्रवासी भारतीय गर्व से कहते हैं कि फिजी आये हमारे पूर्वजों के चलते हिंदी हमारे डीएनए में है। विचारों से वहां के प्रवासी भारतीय पीढ़ी दर पीढ़ी हिंदी को प्रोत्साहन दे रहे हैं। वहां के प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी अनिवार्य भाषा है, लेकिन माध्यमिक विद्यालयों में वैकल्पिक भाषा होने की वजह से ही यह छूट रही है।

अगर हम ऑस्ट्रेलिया की बात करें तो हिंदी के कुछ शब्द वहां पर बहुत ही प्रचलित हैं। जैसे आप ऑस्ट्रेलिया के किसी रेस्टोरेंट में जाएंगे तो आपको चाय; लिखी हुई मिलेगी, चाय को टी वहां कोई नहीं बोलता। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भारत वहां बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका असर दुनिया में भी दिख रहा है। दिल्ली में ऑस्ट्रेलिया के दूतावास में हिंदी बोलने वालों को प्राथमिकता मिलती है। इससे साफ है कि बहुत बढ़ते व्यापारिक संबंधों के कारण भी दुनिया में हिंदी आगे बढ़ी है। निर्विवाद रूप से जाने अनजाने में हिंदी को जितना दबाया गया, वह उतनी ही ऊपर उठती गई। भारत से निकल कर पूरी दुनिया में फैल गई। इसलिए उम्मीद रखिए, हिंदी भाषा का अमृत महोत्सव भी जल्द ही आने वाला है।

गुमशुदा सपने

डॉ. रंजना जायसवाल

'क्या नाम है इसका?'

'आर्यन'

अम्मा ने उसे बड़े प्यार से देखते हुए कहा था

'बड़ा फिल्मी नाम है।'

मालकिन ने मुँह बनाते हुए कहा

'वैसे सब इसको सोनुवा पुकारते हैं।इसके पापा सुनील नाम रखे थे पर हम जहाँ पहले काम करते थे उनके बेटवा का नाम आर्यन था।ई जिद पकड़ लिस हमार नाम भी यही रहे।तब से सब जन आर्यन ही कहत हैं पर हमार जुबान पर आज भी सोनुवा ही चढ़ा है।'

अम्मा ने सोनुवा के सर पर हाथ फेरते हुए कहा था। अम्मा से जिद करके उसने अपना नाम तो बदलवा लिया था पर किस्मत? किस्मत तो वैसे ही घसीटती रही। कभी-कभी वह सोचता कि वह जिंदगी को घसीट रहा है या जिंदगी उसे?बड़े आदमियों की तरह नाम रखने से किस्मत थोड़ी बदल जाती है।

हर जगह दीपावली की जोर-शोर से सफाई चल रही थी।अम्मा को भी आजकल घर आने में देर हो जाती मालकिन बड़े दिल वाली थी,आखिर सालभर का त्योहार था।मालकिन हर साल अम्मा को दीपावली पर एक साड़ी,एक किलो मिठाई और सौ रुपए देती थी। अम्मा का भी फर्ज जाग जाता वो भी मालकिन के साथ सफाई कराने में जुट जाती। बिना ढक्कन की बोतलें, टूटे हुए स्टील के कटोरे,बदरंग कपड़े,पुराने खिलौने और ऐसी ही न जाने कितनी अगड़म-बगड़म चीजें उन्हें मुफ़्त में मिल जाती।

उस दिन अम्मा काम से लौट कर आई तो और सभी सामानों के साथ उनके हाथ में एक पुराना कैलेंडर भी था।भगवान जी का कैलेंडर, कितने सुंदर दिख रहे थे भगवान जी। चेहरे से ऐसा नूर टपक रहा था मानो अभी बोल पड़ेंगे।सुंदर रेशमी कपड़ों से ढके हुए ऊपर से नीचे तक गहनों से लदे हुए पीछे की तरफ एक अलौकिक रोशनी थी।उसके बाल मन पर न जाने कितने मासूम सवालों ने घर बना लिया।

'अम्मा यह सफेद-सुनहरी रोशनी कैसी है?'

'भगवान लोग के पास बहुत शक्ति होती है और यह वही है। सूरज भगवान उनके पीछे हमेशा चम-चम चमकते रहते हैं।'

उस चमक से उसकी आँखें भी चौधियाँ गईं।कितने दिनों तक वह उस चमक में घूमता रहता।अम्मा जहाँ काम करती थी उनकी दादी सास का स्वर्गवास हो गया था।पूरा मुहल्ला इकट्ठा हो गया।

सब कह रहे थे बड़ी अच्छी मौत मरी है।किसी से कोई सेवा नही ली।इस जमाने में पर दादी बनने का सुख भी ले लिया। किसी ने कहा सोने की सीढ़ी चढ़ाओ, बड़े मालिक ने आनन-फानन में नुक्कड़ वाले सुनार की दुकान पर फोन कर दिया और उनका नौकर सोने की सीढ़ी लेकर हाजिर।एकदम पतली-महीन सी बूढ़ी दादी के दाहिने अंगूठे में धागे से मजबूती से बाँध दिया गया।कहीं रास्ते मे गिर न जाए।धागे को काफी कस कर मजबूती से बांधा था।अगर दादी जिंदा होती तो शायद हुड़क देती।

'थोड़ा ढीला बाँध,दर्द हो रहा निशान पड़ जाएगा।'

पर वह तो सारे बंधनों को तोड़ दर्द तकलीफों से ऊपर उठ चुकी थी।

सोने की सीढ़ी बच्चों के खिलौने सी थी सीढ़ी जिसमें दो लंबे डंडे और चार छोटे उन दोनों के बीच में लगे थे। सोनुवा सोच रहा था सीढ़ी कितनी महंगी होगी।अम्मा बताती है सोने का दाम आसमान छू रहा है।अम्मा के पास सोने के नाम पर नाक की कील भी नहीं थी। होती भी तो कैसे जहाँ दो वक्त की रोटी भी ठीक से मयस्सर नहीं वहाँ सोना पहनने की कोई कैसे सोच सकता था।

कभी-कभी मुहल्ले में वो चलती-फिरती सोने की दुकान जरूर आती थी।काँच की बकसिया से कान के बूंदे, नाक की कील, गले का हार, चूड़ी, कंगन और मंगलसूत्र झिलमिलाते रहते।एकदम सुनहरे रंग के, सोने की तरह लगते पर हर पीली चीज़ सोना तो नहीं होती।वो बस पीले रंग के आभूषण थे न सोना और न ही उन पर सोने का पानी चढ़ा होता पर अम्मा और अम्मा जैसे न जाने कितनी लड़कियों और औरतों के तन और मन को सुंदर बनाने के लिए वे काफी थे।

वह सोचता इन बड़े लोगों की मृत्यु भी कितनी शानदार होती है।कभी-कभी वह सोचता रोज-रोज जीवन के संघर्ष से दो-दो हाथ करते-करते वह अब थक चुका है, इससे अच्छा वह मर जाए क्योंकि मृत्यु ज्यादा आसान है जिंदगी जीने से पर जिंदगी इतनी आसानी से पीछा कहाँ छोड़ती है?

वह हमेशा सोचता काश उसके पास भी ऐसी सीढ़ी होती जिस पर चढ़कर वह भगवान के पास जा पाता और उनसे पूछता कि उन्होंने उसकी जिंदगी में इतना संघर्ष क्यों भरा है। आखिर वह दूसरों की तरह सपने क्यों नहीं देख सकता? एक अच्छी और सुकून भरी जिंदगी भर ही तो चाही थी उसने पर पीढ़ियों से संघर्ष ही लिखा था उनके खानदान में

इंसान पैदा कहाँ हुआ यह उसके हाथ में नहीं पर मरेगा कहाँ और कैसे यह तो कम से कम वह तय ही कर सकता।वह भले गरीब घर में पैदा हुआ पर वह गरीब मरना नहीं चाहता था।चार भाई में सबसे बड़ा था वो बापू मजदूरी का काम करता था और माँ घरों में झाड़ू-पोंछे और झूठे बर्तन धोने का काम

करती थी। सुना था अम्मा बहुत साफ बर्तन माँजती थी,बर्तन चाँदी की तरह चमकते थे। अम्मा घर पर भी तो कितना साफ बर्तन माँजती थी कोई साबुन नहीं कोई सोडा नहीं बस चूल्हे की राख या फिर मिट्टी को जूने में फँसाकर ऐसा रगड़कर माँजती बर्तन चम-चम चमकने लगता पर अम्मा अपनी और अपनों की किस्मत को कहाँ चमका पाई थी।

सब कहते थे अम्मा बहुत सुघड़ है हर चीज़ सम्भाल लेती।हर खोई चीज़ को कितनी आसानी से ढूंढ लेती थी वो पर अपने बच्चों की किस्मत,उम्मीदों और सपनों को वो क्यों नही ढूंढ पाई थी।अम्मा के खुद के सपनें और उम्मीदें गुमशुदा की तलाश बनकर रह गए थे।

आखिर सोनुवा ने तय कर लिया वो भी बापू का हाथ बटाएगा पर अगर वो भी चला गया तो उसके भाई-बहनों को कौन देखेगा।

आखिर उसने ऐसा काम ढूंढ लिया जिससे किसी को परेशानी नहीं होगी।तीन-चार घण्टे के काम के लिए पूरे पाँच सौ मिलते थे,हाँ ये बात अलग थी बस लग्न-लग्न में ही काम मिलता था। उसने अपने आप को समझाया तो क्या हुआ हाथ में कुछ तो आएंगे अम्मा और बापू का बोझ कुछ तो कम होगा।इस महीने उसे यह तीसरा काम मिला था, उसने मन ही मन जोड़ा।परसों से खरवास लग रहा है ।अब शादी-ब्याह एक महीने बाद ही होंगे।इसका मतलब एक महीने घर पर ही बैठना पड़ेगा। शुकुवा डूब जाएगा भगवान एक महीने के लिए सो जाएँगे पर पेट और परिवार तो जागता ही रहेगा।दो-चार काम और मिल जाता तो खुद के लिए एक स्वेटर खरीद लेता पर अब तभी

'साले मुँह क्या देख रहा है, उठा सर पर

वी अपनी सोच के दायरे से बाहर आ गया।ठेकेदार ने भद्दी सी गाली दी।वह रुआँसा हो गया पर जाड़े की सर्द रातों में कुहासे में लिपटी सड़कों में हड्डियाँ भी ठंड से कँप-कँपा रही थी।उसने तन पर लपेटे बापू के गमझे को गोल-गोल घुमाकर सर पर रख लिया और एक गहरी सांस ले लाइट के गमले को सर पर रख लिया।बापू ने बताया था कि सांस रोक कर सामान सर पर रखो तो वजन कम लगता है पर लाइट का यह गमला पहले वाले से ज्यादा भारी था।किसी से सुना था सामने वाली पार्टी जैसा माल खर्चा करती है लाइट और साउंड वैसे ही उपलब्ध कराया जाता है।ठेकेदार ने अच्छे पैसे लिए थे जैसा काम वैसा दामष्ठपर उनकी मजदूरी वह तो जस की तस ही थी।

दूल्हे राजा जीप के ऊपर बने रथ पर सवार थे। पीछे सर के पीछे चक्र घूम रहा था।सोनू को न जाने क्यों अम्मा के लाए उस कैलेंडर की याद आ गई जिसमें भगवान जी के सर के पीछे सुनहरे रंग का रौशनी थी। वह सोचने लगा जब उसकी भी शादी होगी तब वह भी ऐसे ही रथ पर बैठकर जाएगा। वह सोचकर मन ही मन मुस्करा पड़ा।

'ये देश है वीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों का' गाने की धुन पर सूट-बूट पहने बराती बेतहाशा नाच रहे थे।अचानक से गाने की धुन बदली और लोग गले में पड़ी टाई और रूमालों को मुँह में दबाए साँप की तरह नाचने लगे।कानफोड़ू बैंड और पंजाबी ढोल की आवाज में नाचते बराती को देख वह आश्चर्य में पड़ गया।बिन बाजू के ब्लाउज,मेकअप से पुते चेहरों को देखकर उसे अम्मा की याद आ गई।अम्मा रोज नहाने के बाद दिवाली के दिन पागे हुए काजल को दाहिने हाथ की पहली और दूसरी उंगली में डुबो आँखों में आँज लेती और बचे हुए काजल को बालों में रगड़कर छुड़ा लेती।मांग में लम्बा सा पीले सिंदूर की रेखा और चवन्नी बराबर टिकुली उनके चेहरे पर कितनी सुंदर दिखती थी।

अम्मा नियम से सरसों का तेल बालों में लगाती और तेल लगाने के बाद हाथ में बचे हुए तेल को चेहरे और हाथों पर चुपड़ लेती। उनका श्रृंगार तो बस इतना ही था पर उसे श्रृंगार में वह कितनी सुंदर लगती थी।अम्मा की सुंदरता के आगे ये लिपे-पुते चेहरे भी उसे फ़ीके लग रहे थे। मस्ती से नाचती लड़कियों और औरतों को ठंड नहीं लग रही थी।

तभी शराब में धुत्त एक बराती उससे आकर टकराया सर पर रखे भारी वजन की वजह से उसका पैर लड़खड़ा गए और उसके लडखड़ाने की वजह से उसके साथियों का संतुलन भी बिगड़ गया।ठेकेदार ने उसे फिर से एक भद्दी गाली देते हुए कहा

'साले एक काम ठीक से नहीं करता। लड़कियों को ताड़ रहा है। आगे से कोई काम नहीं दूँगा, देखता हूँ तुझे कौन काम देता है।'

वह हक्का-बक्का रह गया

'मालिक वह बाराती'

वह कुछ कहता तब तक ठेकेदार आगे बढ़ गया। कहाँ तो वह दो-चार और काम के जुगाड़ में था। यहाँ तो उसकी नौकरी के लाले पड़ गए थे। उसका चेहरा उतर गया। बारात सब्जी मंडी की तरफ से होकर गुजर रही थी।दुकानें लगभग बंद हो चुकी थी दो-चार दूकानों ही खुली थी। दुकानदार अपनी सब्जियाँ समेटने में लगे थे। दुकानदार सड़ी-गली सब्जियाँ छाँट कर सड़कों पर फेंक रहे थे।अगल-बगल दो-चार गाय और साँड़ रात्रि भोज के लिए खड़े थे।वैसे वो हमेशा यहीं आस-पास ही घूमते रहते।साँड़. के विशालकाय शरीर को देख सब चौकन्ने हो गए।लाल साड़ी वाली मोहतरमा खिसक कर पीछे चली गई शायद उन्हें कुछ याद आ गया था।साँड़ कानफोड़ू शोर से बेखबर सर झुकाए खड़े हुए थे मानो दुनिया के मोह माया से पूरी तरह विरक्त हो चुका हो।साँड़ के डर से बारातियों ने चारों तरफ से बारात को घेर लिया। पूरी सब्जी मंडी में सड़ी-गली सब्जियाँ से बजबजा रही थी।

बारातियों ने रुमाल अपने नाक पर रख लिया पर सर पर लाइट के बोझ को लादे वह अपनी नाक को कैसे ढकता।उसका मन खिन्न हो गया।कितना असहाय था वह अपनी परिस्थितियों के आगे बारात दरवाजे पर लग गई। ढोल वाले पूरे उत्साह के साथ ढोल बजा रहे थे और उतने ही उत्साह के साथ बाराती भी नाच रहे थे।

लोग करारे नोट होठों और उंगलियों के बीच दबाए नाच रहे थे।तभी किसी बाराती ने नाचते-नाचते उन नोटों को हवा में उछाल

दिया।ढोल वालों की नज़र हवा में उड़ते उन नोटों पर ही टिकी हुई थी।मौका देख उन्होंने उन नोटों को झपट लिया और उंगलियों में फँसा दुगुने उत्साह के साथ बजाने लगे।एक नोट लहराता हुआ सोनुवा की आँखों के सामने से गुजरा पर वह चाहकर भी उसे पकड़ नही पाया।उसमें से एक भी नोट उसे और उसके साथियों को नहीं मिले। ढोल वाले उन्हें पहले ही लपक लेते।गाढ़े नीले रंग की धोती और पीले कुर्ते के ऊपर लाल मखमली सदरी पहने ढोल वालों के चेहरे पर एक विजयी मुस्कान बिखरी हुई थी।

बाराती मैरिज लॉन में घुस गए।स्वादिष्ट भोजन की मिली-जुली खुशबू बाहर तक आ रही थी।सोनुवा ने एक लंबी सांस खींची और उसकी खुशबू में डूब गया।लड़कीवाले ने पुरुषों को गेंदे की माला और महिलाओं को रजनीगंधा की माला पहनाकर स्वागत किया।बारातियों को दरवाजे पर ही सील बन्द पानी की बोतलें और सूखे मेवे के पैकेट पकड़ाए गए पर लाइट वालों और ढोल वालों को किसी ने एक गिलास पानी भी नहीं पूछा।सोनुवा और उसके साथी झुके कंधों और थके कदमों से गोदाम वापस आ गए। उसने सोचा था मालिक से माफी मांग लूँगा पर क्या वो माफ करेगा पर माफ तो भगवान भी कर देता है।सोनुवा के मन में एक अलग सी उधेड़बुन चल रही थी।

ठेकेदार ने सबका हिसाब कर रहा था।सोनुवा सकुचाता हुआ आगे बढ़ा।

' क्या नाम है तुम्हारा?'

'जी आर्यन!'

वह कहना चाहता था पर न जाने क्या सोचकर शब्द उसकी गले में अटक कर रह गए।

'सोनू'

वक्त के साथ उसने अपनी परिस्थितियों के साथ ही नहीं अपने नाम के साथ भी समझौता कर लिया था।

'आगे से काम पर आने की कोई जरूरत नहीं है।साला लड़कियों को ताड़ता है।वह तो और मौके पर मैंने देख लिया वरना बाराती इसे कहीं का ना छोड़ते।'

'मालिक...'

एक बार उसने सोचा कि वह अपनी सफाई में कुछ कहे पर जब ठेकेदार सोच ही चुका था तब उसके आगे कुछ भी कहने-सुनने का कोई फायदा नहीं था। उसने ठेकेदार के पैर पकड़ लिए।

'भैया! माफ कर दो इस बार गलती हो गई। आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगा।'

पर ठेकेदार ने उसे झटक दिया। बेचारा जमीन पर लुढ़क गया उसके घुटने और कुहनी छिल गए। उसकी आँख में आँसू आ गए।चोट लगने से नहीं बल्कि अपमान सेष्ठ चोट की घाव तो फिर भी भर जाते हैं पर अपमान के घाव शायद कभी नहीं। उसने आसमान की ओर देखा और सोचने लगा।

'भगवान तुम हम जैसे गरीबों के लिए कहाँ सो गए हो?'

अम्मा हमेशा कहती है भगवान से बड़ा कोई नही होता। भगवान के सामने माफी मांग लो तो वह बड़ी से बड़ी गलतियों को भी माफ कर देता है पर क्या इंसान भगवान से भी बड़ा होता है?उसके मालिक ने तो उसकी गलतियों को माफ नहीं किया था।दूल्हे के रथ पर लगा सुनहरा गोला अभी भी चमक रहा था पर न जाने क्यों सोनुवा को उसकी चमक धूमिल होती प्रतीत हो रही थी।सोनुवा ने गमछा सर से उतरा और अपने घावों को पोंछता हुआ घने कोहरे में अपने गुमशुदा उम्मीदों और सपनों के साथ गायब हो गया।

लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश पिन- 231001
मोबाइल न-9415479796

गाँव गिराँव हिन्दी मासिक पत्रिका पाठकों के लिए gaongiraw.in पर भी उपलब्ध।
अन्य वेबपेज के लिए देखें
www.gaongiraw.com
www.gaongirawsports.com

वीना सिंह की दो लघुकथाएं

वीना सिंह

आवाज़ बंद है

भाषाः देशज, टंकित शैली

चौपाल पर चुपचाप बैठे सभी लोगों की ओर देखकर रधिया बोली,

'काहे चुप हो गए सब? अरे बोले बिना भी कोई जिए है का?'

रामबचनः

'कौन बोले, रधिया? गाँव के बोलन के मोल लग गए अब।'

रधियाः

'अरे हमरे बाबू कहत रहैं, गाँव मा तो बातन से धरम निभत है। अब सबके मुँह में ताला कैसा?'

सुखई काकाः

'बिटिया, अब गाँव गाँव ना रहि, मोबाइल की गूंज मा सब मुँह बिसर गए।'

रधियाः

'मोबाइल से पेट भरत है का? कल खेत मा बैल खोल गवा, चुपचाप देखत रहिन सब, कोई चिल्लाया तक नाहीं!'

मुनिया (धीरे से):

'रधिया दीदी, अब चिल्लाय का मतलब झगड़ा हो जात है। सब डरै हैं।'

रधियाः

'किससे डरै? आपन गाँव है, आपन खेत है, आपन लोग हैं। फिर डर किस बात के?'

हरखू (हँसते हुए):

'डर बातन से नाहीं है, डर है के कहीं मोबाइल पे रिकॉर्ड होइ जाय!'

रधिया (गंभीर होते हुए):

'तो अब गाँव मा मोबाइल बोले, मनई चुप रहै?'

राजूः

'ए रधिया दीदी, अब लोगन के पास समय नाहीं। सब का परवाह बा-सिग्नल आवत है कि नाहीं!'

रधियाः

'सिग्नल से जियब? खेत सूख गइल, बाबूजी का बुखार मा डाक्टर ना आया, बस फोन पर फोटो भेज दिहिन। का फायदा?'

सुखई काकाः

'बेटी, पहिले जब कुआँ सुखत रहा, सब गाँव जुट जात रहा। अब? सबके फोन मा व्यस्तता है, दिल मा दूरी।'

रधियाः

'हमार माई कहत रहिन, जब आवाज चुप हो जात है, तब घर गूँग हो जात है। अब तो सारा गाँव गूँग भवा लागत है।'

रामबचनः

'तो का करब बिटिया? बदले समय का रोका नाहीं जा सकत।'

रधियाः

'समय बदले, मनई ना। हम गाँव मा फिर से बोलना शुरू करब। माटी से बात करब, गाय से बोलब, तालाब से पूछब-'काहे सूख गइल?''

मुनिया (मुस्कुराते हुए):

'दीदी, हमहूँ तोहसे बोले आई! सच्ची, अब तक मोबाइल मा ही बतियावत रहेन।'

हरखूः

'रधिया, तोहार बात मा दम बा। गाँव बोले लागे त सब जियत लागत है।'

रधियाः

'त फेर बोलो सब! आवाज बंद रहे त गाँव ना, बस ईंट-पत्थर के ढांचा। आवाज खोलो, मन खोलो, गाँव फिर से जियाइ!'

फूलन की मिठास

गाँव के चौपाल पर इन दिनन रधिया के नाम की बड़ी सरगर्मी है। अरे, अब कौन कहे कि गाँव की बिटिया कुछ नाही कर सकत? देख ल्यो, रधिया मोबाइल से वीडियो बनावती है–रोटी बेलत बेलत, मटका भरत भरत, गोबर पाथत पाथत।

पिछले हफ्ते ऊ 'देसी जिनगी' वाला वीडियो डार दी रही–लाखों लोगन ने देख डारो। ओही में ऊ कहे रही–'हमार माटी में खुशबू है, बस पहिचान चाही।'

टीवी वाले आय रहे इंटरव्यू लेबे। पंचायत मंच सजवा डारी। बैनर में लिका था–'हमका गर्व है हमार बिटिया पर!'

घसीटे चच्चा, जौन हर गाँव-बैठकी में आपन आलोचना की झोली लेके पहुँच जात हैं, खाँसते खाँसते कहिन–

'देखौ भइया, फूल-पत्ती ओढ़ के, नाच गा के इंटरनेट की हीरो बन गई रधिया! अब ई भी कोई कला हुई?'

रधिया कुछु ना बोली। बस मुस्कराय भी नाही। ऊ जानत रही कि चच्चा अबहिन ओका ओही समझत हैं–

जउन की माई दूसरन के घर झाड़ू लगावत रही,

जउन बिटिया स्कूल में मिड-डे मील वाली लाइन में सबसे पीछे खड़ी होत रही।

तीसरे दिन स्कूल मा फेर एक समारोह भओ। ब्लॉक अधिकारी पधारे। उ कहिन–'बिटिया, तोहका देख के लागता है गाँव के दिन फिरे हैं।'

फोटू खिंचिन, मिठाई बँटी।

ऊही संझा रधिया एक अउर वीडियो डार दी–न कोई फिल्टर, न फूलन की सजावट। बस माटी सने हाथन को कैमरे के आगे फैलाए कहे लगी–

'कबहूँ ई भी देखौ, जउन हाथन से फूल सजत हैं, ऊहिन में भी खुशबू होत है।'

घसीटे चच्चा चुप्पी साध लिहिन।

चौपाल भी।

वेद मिश्र की तीन कविताएँ

अंधेरों ने उजाले की शिकायत कर दी,
मुझसे जलता है ये, मुझे रहने नही देता कही
जहाँ मैं जाऊं मेरे पीछे चला आता है,
मुझे मिटाना चाहता है, हटाना चाहता है,

जब उजाले से जवाब-तलब किया,
बड़ा हैरान हुआ,
बोला, मैं तो बस रौशनी देने का काम करता हूँ,
किसी को मिटाने का नहीं,
है कहाँ ये अँधेरा, कभी उसे देखा नही,
उसे लगा बुरा तो बुलाओ सामने,
अभी माफ़ी माँग लूँगा

पर ऐसा हुआ ही नही
अँधेरा जब भी उजाले से मिलना चाहा, वो बचा ही नही त
....

क्या रोकेगी पाओ की जंजीरे,
मंज़िलों से कह दो, अभी भटका नहीं हूँ मैं,
चलती है साथ मेरे अपनों की दुआए,
होसलो को कह दो, अभी थका नहीं हूँ मैं,
है दिल में बाक़ी, थोड़ी और भी मोहबत्त,
दिल से मेरे कह दो, अभी तनहा नहीं हूँ मैं
खोजने है अभी और कई हुनर, खुद में
ज़माने से कह दो, अभी हारा नहीं हूँ मैं....
....

आराम और सकून, में फरक होता है क्या ?
हसीं और ख़ुशी, में फरक होता है क्या ?
सुख और आनंद, में फरक होता है क्या ?
एकांत और अकेले, में फरक होता है क्या ?
दोस्ती और मोहबत, में फरक होता है क्या ?
पढ़ने और समझने, में फरक होता है क्या ?
ज्ञान और अनुभव, में फरक होता है क्या ?
विचार और चिंता, में फरक होता है क्या ?
नशा और सरूर, में फरक होता है क्या ?
बेफिक्री और लापरवाही, में फरक होता है क्या ?
चलो, अब कौन सोचे ये सब ?
सोचने से क्या कभी फ़रक होता है क्या ?

मानपत्र

सभी कामों से निपट,कमर सीधी की ही थी कि बाहर की घंटी बज उठी।खुद को भी घसीटते हुए दरवाजा खोला- ''अरे मिसेज़ वर्मा आप!''

मिसेज़ वर्मा हमारी पड़ोसन।हाथ में लाल कपड़े में लिपटा 'कुछ' दिखाई दिया। आँखें मल कर गौर से देखने की कोशिश की।

शायद मेरे लिए गिफ्ट लाई हैं। अच्छी पड़ोसन है मैसेज वर्मा। कल ही सेवानिवृत्त हुई हैं तो शायद पड़ोसी धर्म निभा रही हैं। 'अरे!इसकी क्या... ।'

मेरे मुँह से यूँ ही निकला और फिर अपनी जबान को जोर से पकड़ थाम लिया।

''आइए!अंदर तो आइए!'' हैरान-परेशान मिसेज वर्मा का तो गुस्सा ही फूट पड़ा-''देखो इतने सालों की सर्विस का यह फल दिया है स्कूल ने...।''

लाल कपड़े में लिपटा 'कुछ' मेरे हाथों में बड़ी ज़ोर थमा दिया।

असमंजस और उत्सुकता से कपड़ा हटाकर देखा-''बहुत सुंदर मानपत्र है।''

''सुंदर है?'' उनकी आग्नेय दृष्टि से मैं फिर सिमट गई।अपनी गलती ढूँढने के लिए मैंने पूरे मानपत्र को ऊपर से नीचे तक पढ़ लिया।

'अरे वाह!बहुत सुंदर शब्द चयन ,आपके नाम के साथ स्कूल का गौरव जुड़ा हुआ है। संस्कृत शब्दों में परिजनों के लिए मंगलकामनाएँ हैं।' कुछ सोच खुद को थाम लिया। निगोड़ी जीभ भी तो कतरनी सी चलती है।

''यही तो! शहर के नामी-गिरामी अंग्रेजी मीडियम स्कूल में बरसों से पढ़ा रही हूँ।मेरी स्कूलिंग भी इंग्लिश मीडियम स्कूल में ही हुई और मुझे यह मानपत्र!'

एक बार फिर हिकारत भरी निगाहों से उन्होंने मानपत्र को देखा।

मैंने घबरा कर मानपत्र को ऊपर से फिर से पढ़ डाला। बहुत सुंदर शब्दों में प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ न था।प्रशंसा!आभार!मंगलकामनाएँ!प्रशंसा कुछ ज्यादा ही ...शायद जिसकी वे...... मेरे चेहरे पर असंख्य प्रश्नवाचक चिन्ह चिपक गए।

'आप भी मिसेज़ काले कहाँ कुछ समझ पाती हैं। मुझे मानपत्र इंग्लिश में दिया जाना चाहिए था। हिंदी में लिखा यह मानपत्र तो...।'

गुस्से से तमतमाते हुए मानपत्र सोफे पर पटक दिया।

'यू नो मिसेज़ काले दिस इज़ माय इंसल्ट(आप जानती हैं मिसेज़ काले यह मेरा अपमान है)। मेरे सन इन लॉ ने तो बोल ही दिया- 'वर यू टीचिंग इन हिंदी मीडियम स्कूल मॉम इन लॉ (क्या आप हिंदी माध्यम के स्कूल में पढ़ाती थीं सासू माँ)।'

समझ नहीं आ रहा घर वालों को क्या मुँह दिखाऊँ।'

धम्म से उनका भारी-भरकम शरीर सोफे में धँस गया। और फिर एकाएक उठ खड़ी हुई।

'आई हैव टू गो टू स्कूल।आई एम गोइंग टू कंप्लेंट अगेंस्ट दिस। एम नॉट गोइंग टू बेयर दिस।'

अपमान की अग्नि में झुलसती मिसेज़ वर्मा उफनती नदी सी उफनती हुई दूर चली गईं।

भाषा, मान-अपमान में उलझे ,अपने चरम सौंदर्य से दिपदिपाते स्वर्णिम अक्षरों में लिखे मानपत्र को ठगी सी देख रही थी।

-डॉ.यशोधरा भटनागर

बालको की सर्कुलर इकोनॉमी से निर्माण को नई राह

वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए फ्लाई ऐश (राख) के पुनः उपयोग की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। थर्मल पावर प्लांट्स से उत्पन्न फ्लाई ऐश का पुनः उपयोग करते हुए उसे टिकाऊ ईंटों में बदला जा रहा है, जो प्रधानमंत्री आवास योजना सहित विभिन्न सरकारी परियोजनाओं में उपयोग की जा रही हैं। यह पहल ग्रामीण और शहरी आवास विकास में सतत आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए नए रास्ते खोल रही है।

राष्ट्रीय सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप बालको 70 से अधिक स्थानीय ईंट निर्माण यूनिट को फ्लाई ऐश की आपूर्ति कर रहा है, जिससे पर्यावरण-अनुकूल ईंटों का उत्पादन संभव हो पा रहा है और सार्वजनिक अधोसंरचना परियोजनाओं में इनका उपयोग किया जा रहा है।

फ्लाई ऐश ईंटें पारंपरिक लाल ईंटों की तुलना में हल्की, अधिक टिकाऊ और थर्मल इंसुलेशन में बेहतर होती हैं, जिससे ये ऊर्जा की बचत वाले निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त साबित होती हैं। जबकि लाल ईंटों के निर्माण में उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है, जिससे भूमि क्षरण होता है। वहीं फ्लाई ऐश ईंटें औद्योगिक अपशिष्ट का पुनः उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में योगदान देती हैं और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करती हैं। यह परिवर्तन भारत की सर्कुलर इकोनॉमी के लक्ष्यों को सीधे तौर पर लाभप्रद साबित हो रहा है और स्थानीय उद्यमों को सशक्त बना रहा है।

बालको फ्लाई ऐश की निःशुल्क आपूर्ति करता है, जिससे ईंट निर्माताओं के लिए कच्चे माल की लागत में कमी आती है और वे पारंपरिक लाल ईंटों का टिकाऊ और मजबूत विकल्प तैयार कर पाते हैं।

बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक राजेश कुमार ने कहा कि बालको में हम सर्कुलर इकोनॉमी के सिद्धांतों को अपनाकर न सिर्फ पर्यावरण की रक्षा कर रहे हैं, बल्कि स्थानीय समुदाय और सूक्ष्म उद्योगों को भी सशक्त बना रहे हैं। फ्लाई ऐश से बनी ईंटों का इस्तेमाल बढ़ाकर हम पर्यावरण के अनुकूल निर्माण को बढ़ावा दे रहे हैं। यह हमारे संसाधनों के सस्टेनेबल इस्तेमाल की एक दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का हिस्सा है।

बालको की फ्लाई ऐश इस्तेमाल करने की योजना का मकसद संसाधनों का बेहतर और सही तरीके से उपयोग करना है। कंपनी 100 प्रतिशत ऐश उपयोग प्राप्त कर चुकी है और सीमेंट, निर्माण तथा सड़क विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फ्लाई ऐश की आपूर्ति कर रही है। इस पहल के माध्यम से बालको औद्योगिक अपशिष्ट के उत्पादक उपयोग को बढ़ावा देते हुए एक हरित भविष्य की दिशा में ठोस कदम उठा रहा है, जो उद्योग और पर्यावरण दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

कंपनी ऐश कंट्रोल टॉवर (एसीटी) तकनीक से राख प्रबंधन दिशानिर्देशों का पालन सुनिश्चित करने और राख के परिवहन को सुव्यवस्थित करने के लिए रियल टाईम की निगरानी भी करता है। कंपनी शत प्रतिशत ऐश उपयोग कर रही है जो उद्योग जगत के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह उपलब्धि ऐसे समय में सामने आई है जब भारत सरकार भी अपशिष्ट से संपत्ति (वेस्ट टू वेल्थ) जैसी योजनाओं के माध्यम से सर्कुलर इकोनॉमी को राष्ट्रीय प्राथमिकता बना रही है। ऐसे में बालको का यह मॉडल राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका की तरह देखा जा रहा है।

बीसीसीएल और सीपेट रायपुर के बीच एमओयू

कंपनी की सीएसआर पहल के अंतर्गत 120 परियोजना प्रभावित अभ्यर्थियों को मिलेगा तकनीकी प्रशिक्षण। प्रतिष्ठित पेट्रोकेमिकल संस्थानों में मिलेंगे रोजगार के अवसर। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (सीपेट), रायपुर के बीच आज एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर संपन्न हुआ, जिसके तहत बीसीसीएल के परियोजना प्रभावित क्षेत्रों के 120 अभ्यर्थियों को बीसीसीएल सीएसआर पहल के अंतर्गत कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। चार माह की अवधि के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अभ्यर्थियों को मशीन ऑपरेटर- प्लास्टिक प्रोसेसिंग, इंजेक्शन मोल्डिंग, ब्लो मोल्डिंग, प्लास्टिक एक्सट्रूज़न, टूल रूम तथा मशीन ऑपरेटर एवं प्रोग्रामर-सीएनसी मिलिंग एवं सीएनसी लेथ जैसे विभिन्न ट्रेड्स में प्रशिक्षित किया जायेगा।

कोयला भवन मुख्यालय में आयोजित एमओयू हस्ताक्षर समारोह में बीसीसीएल की ओर से निदेशक (मानव संसाधन) मुरली कृष्ण रमैया के अतिरिक्त महाप्रबंधक (सीएसआर) कुमार मनोज तथा सीएसआर टीम उपस्थित रहीं, जबकि सीपेट रायपुर की ओर से प्रबंधक (तकनीकी) रविंद्र रेड्डी एवं सहायक तकनीकी अधिकारी एस. पृथ्वीराज ने भाग लिया।

अवसर पर निदेशक (मानव संसाधन) मुरली कृष्ण रमैया ने कहा कि किसी भी संगठन की सफलता केवल उसके मूल कार्यों एवं निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में नहीं बल्कि उसके सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में निहित होती है, और आज का यह समझौता ज्ञापन हमारे इसी संकल्प का एक उदाहरण है। परियोजना का उद्देश्य चयनित अभ्यर्थियों को केवल तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना नहीं, बल्कि कौशल और ज्ञान से सशक्त बनाना है, जो उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर के साथ उनके जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव ला सकें। बीसीसीएल खनन गतिविधियों के साथ अपने सीएसआर प्रयासों के तहत स्थानीय नागरिकों एवं युवाओं के जीवन स्तर बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

उल्लेखनीय है कि लगभग ₹82.04 लाख की अनुमानित लागत से क्रियान्वित इस परियोजना के लिए बीसीसीएल और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (सीपेट) रायपुर की संयुक्त टीम ने प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक जागरूकता अभियान चलाकर संभावित उम्मीदवारों से सीधा संवाद किया, जिसके परिणामस्वरूप निर्धारित मानकों और मौजूदा एसओपी के अनुसार 120 युवाओं का चयन किया गया। प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद प्रतिभागियों को प्रतिष्ठित पेट्रोकेमिकल संस्थानों में प्लेसमेंट सहायता भी प्रदान की जाएगी, जिससे ग्रामीण युवाओं को रोजगार के नए अवसर और वंचित परिवारों के लिए सतत आजीविका का मार्ग प्रशस्त होगा।

जन सहायता हास्पिटल

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त

(आकस्मिक सेवा निःशुल्क उपलब्ध)

24/7 EMERGENCY SERVICE

कटरियाँ (इन्डस्ट्रियल एरिया के सामने, नेशनल हाइवे-2) रामनगर मार्ग, वाराणसी

मो0- 9984499616, 9415441990

एनटीपीसी कुडगी ने वितरित किए 41,000 नोटबुक्स

एनटीपीसी कुडगी ने अपने कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से आसपास के गाँवों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच 41,000 से अधिक नोटबुक्स वितरित किए। इस पहल से हजारों विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में यह एक सराहनीय कदम साबित हुआ है।

इस अवसर पर एनटीपीसी प्रबंधन ने बताया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और कंपनी की यह जिम्मेदारी है कि वह स्थानीय समुदाय की शैक्षणिक प्रगति में योगदान दे। नोटबुक वितरण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाई में आने वाली बुनियादी कठिनाइयों को कम करना, उन्हें शिक्षा के प्रति प्रेरित करना और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में सहयोग प्रदान करना है।

नोटबुक्स प्राप्त कर बच्चों के चेहरे पर विशेष उत्साह झलक उठा। कई विद्यार्थियों ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह का सहयोग उनकी पढ़ाई को और सुगम बनाएगा तथा उन्हें उच्च शिक्षा की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा।

एनटीपीसी कुडगी प्रबंधन ने कहा कि स्टेशन केवल बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि स्थानीय समाज के सतत विकास के लिए भी निरंतर कार्यरत है। स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में कंपनी द्वारा अनेक पहलें चलाई जा रही हैं। प्रबंधन ने यह भी आश्वस्त किया कि भविष्य में भी बच्चों की शिक्षा और सामुदायिक उत्थान हेतु ऐसी कई योजनाएँ लागू की जाती रहेंगी।

स्थानीय ग्रामीणों, अभिभावकों और विद्यालय प्रबंधन समितियों ने इस पहल की खुलकर सराहना की। उनका कहना था कि नोटबुक्स का वितरण विद्यार्थियों की शिक्षा यात्रा को और अधिक सुगम एवं प्रेरणादायी बनाएगा तथा ग्रामीण शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने में यह पहल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। ●

राउरकेला इस्पात संयंत्र ने 47,209 ऊर्जा बचत प्रमाणपत्र किए प्राप्त

राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) ने भारत सरकार की परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड (पीएटी) योजना के तहत 47,209 ऊर्जा बचत प्रमाणपत्र (ईएससर्टिफिकेट्स) प्राप्त करके ऊर्जा संरक्षण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारतीय ऊर्जा एक्सचेंज (आईईएक्स) में अंतिम कारोबार मूल्य के अनुसार लगभग 9 करोड़ रुपये मूल्य के इन प्रमाणपत्रों का मुद्रीकरण किया जा सकता है या नामित डिपॉजिटरी के पास जमा किया जा सकता है।

यह उपलब्धि वित्त वर्ष 2022-23 से 2024-25 तक के पीएटी चक्र के अंतर्गत प्राप्त हुई है, जिसके दौरान आरएसपी ने 0.6668 टीओई/टीसीएस के लक्ष्य की तुलना में 0.6539 टन तेल समतुल्य प्रति टन कच्चे इस्पात (टीओई/टीसीएस) की विशिष्ट ऊर्जा खपत (एसईसी) प्राप्त की। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) द्वारा पैनलबद्ध एक मान्यता प्राप्त ऊर्जा लेखा परीक्षक (एईए) द्वारा 23 जून 2025 को किए गए इस ऑडिट के परिणामस्वरूप आरएसपी को 47,209 ईएससर्टिफिकेट्स प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) और राष्ट्रीय संवर्धित ऊर्जा दक्षता मिशन (एनएमईईई) के तहत शुरू की गई पीएटी योजना, बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं, जिन्हें नामित उपभोक्ता (डीसी) कहा जाता है, को विशिष्ट ऊर्जा कटौती लक्ष्यों को पूरा करना अनिवार्य बनाती है। लक्ष्य से बेहतर एसईसी प्राप्त करने वाली इकाइयों को ईएससी प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं। जो नामित उपभोक्ता लक्ष्य पूरा नहीं कर पाते, उन्हें अनुपालन के लिए आईइएक्स के माध्यम से समकक्ष प्रमाणपत्र खरीदना होगा।

राउरकेला इस्पात संयंत्र की यह उल्लेखनीय उपलब्धि ऊर्जा प्रबंधन विभाग और आरएसपी की विभिन्न उत्पादन इकाइयों के निरंतर प्रयासों से संभव हुई है, जिन्होंने ईंधन दर, विशिष्ट बिजली खपत और सह-उत्पादन (यानी कैप्टिव बिजली उत्पादन) जैसे तकनीकी-आर्थिक मापदंडों को बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से काम किया। ●

सेल ने की आईएनएस उदयगिरि और हिमगिरि के लिए क्रिटिकल-ग्रेड स्टील की आपूर्ति

भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अधीन संचालित, भारत की सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की स्टील उत्पादक और महारत्न कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, ने भारतीय नौसेना के दो उन्नत फ्रंटलाइन युद्धपोतों, आईएनएस उदयगिरि और आईएनएस हिमगिरि के लिए लगभग 8,000 टन क्रिटिकल-ग्रेड स्टील की आपूर्ति करके देश के रक्षा क्षेत्र के साथ अपनी महत्वपूर्ण साझेदारी जारी रखी है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में, विशाखापत्तनम में आयोजित एक समारोह के दौरान, इन दोनों फ्रिगेटों को 26 अगस्त को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया।

सेल ने भारतीय नौसेना के इन दोनों उन्नत युद्धपोतों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंपनी ने मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड के साथ साझेदारी करते हुए, अपने बोकारो, भिलाई और राउरकेला स्टील प्लांट्स से क्रिटिकल ग्रेड की हॉट-रोल्ड शीट और प्लेट्स की आपूर्ति की। भारतीय नौसेना के लिए क्रिटिकल -ग्रेड स्टील के विकास और आपूर्ति के जरिये, सेल ने आयात प्रतिस्थापन और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह सीधे तौर पर 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' पहलों से जुड़ा हुआ है और रक्षा ज़रूरतों के लिए विशेष गुणवत्ता वाले स्टील उपलब्ध करने की दिशा में भारत की आयात पर निर्भरता को घटाता है। अकेले राउरकेला स्टील प्लांट के 'स्पेशल प्लेट प्लांट' ने टैंक, युद्धपोतों और मिसाइलों जैसे रक्षा अनुप्रयोगों के लिए एक लाख टन से भी अधिक क्रिटिकल - ग्रेड स्टील की आपूर्ति की है।

आईएनएस उदयगिरि और आईएनएस हिमगिरि जैसे जहाजों को नौसेना में शामिल करना, यह दिखाता है कि भारत अब देश में ही अपने जहाजों के लिए बुनियादी स्टील से लेकर इनके जटिल डिजाइन बनाने और कुशल चालक दल तक को विकसित करने में सक्षम है, जो हमारे देश की रक्षा प्रणाली की ताकत और मज़बूत नींव को प्रदर्शित करता है। भारत के रक्षा क्षेत्र के साथ सेल की स्थायी साझेदारी अच्छी तरह से स्थापित है, जिसमें आईएनएस विक्रांत, आईएनएस नीलगिरी, आईएनएस अजय, आईएनएस निस्तार, आईएनएस अर्णाला, आईएनएस विंध्यगिरि और आईएनएस सूरत जैसे प्रतिष्ठित जहाजों के लिए महत्वपूर्ण-ग्रेड स्टील की आपूर्ति का एक गौरवपूर्ण इतिहास है। यह अटूट प्रतिबद्धता एक विश्वसनीय राष्ट्रीय निर्माता और देश के चल रहे नौसैनिक आधुनिकीकरण में एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में सेल की स्थिति को मजबूत करता है।

आरएलआई एनटीपीसी विन्ध्याचल को मिला सम्मान

रीजनल लर्निंग इंस्टीट्यूट (RLI) NTPC विन्ध्याचल को 16वें लीडरशिप इंडिया समिट एंड अवॉर्ड्स में 'सर्वश्रेष्ठ नवोन्मेषी लर्निंग प्रैक्टिसेज अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। यह कार्यक्रम नई दिल्ली में आयोजित हुआ।इस गौरवपूर्ण अवसर पर राघवेंद्र प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (आर एल आई) ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किया, जो कि सम्पूर्ण स्टेशन के लिए गर्व का क्षण रहा।यह सम्मान आरएलआई विन्ध्याचल द्वारा किए गए अभिनव और प्रभावशाली लर्निंग पहलों को मान्यता देता है, जिन्होंने न केवल एक नई मिसाल कायम की है, बल्कि एनटीपीसी की निरंतर विकास और पेशेवर उत्कृष्टता की संस्कृति को भी सुदृढ़ किया है। इस उपलब्धि से संस्थान की प्रतिबद्धता और गुणवत्ता-प्रधान प्रशिक्षण दृष्टिकोण की पुष्टि होती है, जिससे एनटीपीसी के कर्मचारियों के कौशल और दक्षता में निरंतर वृद्धि हो रही है।

काम और नाम दोनों गुमनाम

–योगेन्द्र नारायण

हिन्दी जगत को 'मदन कोश' अर्थात जीवन चरित्रस्तोम देने के बावजूद पण्डित मदनलाल तिवारी का नामलेवा भी आज कोई नहीं दिखाई देता। जिस समय मदन कोश लिखा गया, उस समय तक उत्तर प्रदेश का नाम संयुक्त प्रान्त आफ आगरा एण्ड अवध था। सन् 1935 में इस प्रदेश का नाम बदला और केवल संयुक्त प्रान्त रह गया। सन् 1950 में यह नाम पुनः बदला और अब इसे उत्तर प्रदेश कहा जाने लगा। उस समय प्रदेश में केवल एक ही विश्वविद्यालय था, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

सन् 1907 में वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित 'मदन कोश' अर्थात 'जीवन चरित्रस्तोम' के लेखक पं. मदनलाल तिवारी इटावा के गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में सहायक अध्यापक थे। इसके अलावा तिवारीजी का कोई परिचय नहीं मिलता। वे इटावा के ही थे या कहीं और से बदली हो कर आये थे, इस बारे में भी कोई जानकारी नहीं। जीवन चरित्रस्तोम में संसार के एक हजार महानुभावों का चरित्र संकलित है। स्तोम का अर्थ स्तुति या प्रशंसा है। यह कोंश उस समय की भाषा की ओर ध्यान आकर्षित करता है। तिवारीजी ने 'कोश' को लगातार 'कोष' ही लिखा है, जबकि बाद के सभी लेखकों ने 'कोश' ही लिखा है।

मदन कोश का दूसरा संस्करण वेंकटेश्वर प्रेस से ही सन् 1932 में प्रकाशित हुआ। लेखक तो पण्डित मदनलाल तिवारी ही थे, परन्तु पुस्तक का नाम मदन कोश से बदल कर 'संसार के महापुरुष' अर्थात संसार भर के सभी देशों के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध महापुरुषों का संक्षिप्त परिचय हो गया। इस संस्करण के संशोधन और परिवर्धन कर्ता थे बाबू रुद्रनारायण अग्रवाल। मदन कोश में महापुरुषों के जन्म-मृत्यु की जानकारी परिचय के बीच में दी गयी थी परन्तु दूसरे संस्करण में नाम के बाद ही कोष्ठ में जन्म-मृत्यु का सन् दिया गया, परन्तु अखरने वाली बात यह लगी कि मदनमोहन मालवीयजी का परिचय ही हटा दिया गया। मदन कोश में मालवीयजी का परिचय 'देशहितैषी' की उपाधि के साथ करीब एक पृष्ठ में दिया गया था। दूसरे संस्करण में कुल छपे पृष्ठों की संख्या 434 है तथा कुछ महानुभावों के नाम परिशिष्ट में जोड़े गये हैं।

मदन कोष की प्रस्तावना में तिवारीजी ने लिखा है-

''पश्चिमोत्तर और अवध देश के लेफ्टिनेण्ट गवरनर सर ए.पी.मैकडानल साहब बहादुर ने शिक्षाविभाग की रिपोर्ट का गुण-दोष का विवेचन करते हुए, रेजोल्युशन नं.448/150048/9 के द्वारा, नेनीताल से 8अक्टोबर, सन्1901 को उत्तेजना के साथ सूचना दी थी कि देशीय भाषा में अच्छे-अच्छे जीवन चरित लिखा जाना आवश्यक है, क्योंकि विचारशील चित्तवृत्ति छात्रों पर इतना प्रभाव किसी प्रकार के साहित्य का नहीं पड़ता है जितना कि अच्छे-अच्छे चरित्रों का।

लार्ड साहब के पूर्वोक्त कथन से प्रेरित होकर मैंने यह रचना की जो अपने ढंग की अनूठी है, क्योंकि इसमें संसार के एक सहस्त्र श्रेष्ठजनों के चरित्र हैं, जिनमें से बहुत से संस्कृत व हिन्दी साहित्य से संबन्ध रखने वाले हैं।

ग्रन्थ की सामग्री केवल अत्यंत विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र की गयी है और प्राचीन तथा रहस्यमय चरित्रों के लिखने में पुरातत्ववेत्ताओं के अन्वेषण का भलीभांति व्यवहार किया गया है। जिन बातों के विषय में प्रामाणिक विद्वानों का मतभेद है, उनके निर्णय करने में केवल अधिक बुद्धि सम्मत तथा न्याय संगत मतों को ग्रहण किया गया है।

बहुधा स्थलों में तो चरितान्वेषण के लिए केवल मूल स्रोतों का ही आश्रय लिया है और यदि कोई चरित संग्रह ग्रन्थों के आधार पर लिखा है तो उसकी शुद्धता की परीक्षा सावधानी से कर ली है।

यह ग्रन्थ अध्यापक जिज्ञासु तथा पाठकों को समान रूप से लाभदाई होगा। क्यों कि बहुत से चरित्र विस्तृत रूप से भी लिखे गये हैं।

जिज्ञासुओं की आवश्यकता पूरक इस प्रकार का यह पहला ही ग्रन्थ है। संस्कृत और हिन्दी साहित्य शिक्षा की इससे सबसे बड़ी उन्नति होगी और पढ़ने वाली दुनियां पर नीति तथा बुद्धिमत्ता का, जिससे यह ग्रन्थ ओतप्रोत है, अवश्य ही यह प्रभाव पड़ेगा।

इटावा 7मार्च 1907 मदनलाल तिवारी''

(1)

इस क्रम में दूसरे लेखक हैं चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा। हिन्दी साहित्य के आरम्भिक लेखकों में गण्य व्यक्ति चतुर्वेदीजी का जन्म इटावा में ही सन् 1920 में हुआ था परन्तु उत्तर प्रदेश के गठन के बाद वे इलाहाबाद में बस गये। इनकी लिखी करीब 150 पुस्तकें बतायी जाती हैं, जिनमें दो शब्दकोश शब्दार्थ कौस्तुभ (संस्कृत से हिन्दी) और शब्दार्थ पारिजात (हिन्दी) हैं। इनका वाल्मीकि रामायण का हिन्दी अनुवाद काफी चर्चित रहा है। इसके अलावा वारेन हेस्टिंग, रावर्ट क्लाइव,, रामानुजाचार्य, अल्लाह, माधव प्रसाद मिश्र निबन्धावली, वासुदेव-श्रीकृष्णचन्द्र, बाल साहित्य माला (20 पुस्तकें) आदि किताबें हैं। चतुर्वेदीजी ने

दो मासिक पत्रिकाओं श्रीराघवेन्द और श्रीयादवेन्द्र नामक का भी सम्पादन किया। वारेन हेस्टिंग की जीवनी ही इटावा में इनकी सरकारी नौकरी जाने का कारण बनी, ऐसा बताया जाता है। इसके बाद तो वे साहित्य लेखन में ही रम गये।

नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से सन् 1919 में प्रकाशित 'भारतीय चरिताम्बुधि' के संग्रहकर्ता द्वारका प्रसाद शर्मा ने कोश में 2550 व्यक्तियों के चरित का संग्रह किया है। इस हिसाब से कोश का कलेवर काफी बडा है। कोश के आवरण पृष्ठ पर ही किस-किस तरह के लोगों का चरित्र संग्रह किया है, इसे स्पष्ट कर दिया गया है। वैदिक, पौराणिक, ऋषि, मुनि, राजा, रानी, स्थान तथा ऐतिहासिक पुरुषों, कवियों आदि का हिन्दी भाषा में संक्षिप्त परिचय देना ही इस कोश का उद्देश्य है।

भारतीय चरित्रकोश मण्डल, पूना से सन्1932 में भारववर्षीय प्राचीन चरित कोश, डा.सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राल के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। कोश निर्माण की दिशा में यह संस्था महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इससे पहले मराठी में प्राचीन चरित्र कोश, मध्यकालीन चरित्र कोश तथा अर्वाचीन चरित्र कोश, साहित्य कोश, साहित्यकार कोश, पात्र कोश, मानक शब्दकोश आदि लिखे गये एवं प्रकाशित हुए हैं। इनमें से प्राचीन चरित्रकोश का परिवर्धित एव संशोधित रूप हिन्दी में प्रस्तुत किया गया है। भारतवर्षीय चरित्र कोश दो भागों में है तथा पृष्ठों की संख्या 1204 है।

चरित्र कोशों में सबसे नयी प्रविष्टि भारतीय चरित्र कोश की है। लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' द्वारा लिखित इस कोश को सन 2009 में राजपाल एण्ड संस ने प्रकाशित किया। इस कोश में दो हजार भारतीयों के व्यक्तित्व को समाहित किया गया है। कहना न होगा कि इस कोश का कलेवर भी बड़ा है।

लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' का जन्म अल्मोड़ा जिले के बक्साड. गांव में सन् 1919 में जन्म हुआ। पढ़ने में रुचि के कारण वे वाराणसी आये और काशी विद्यापीठ से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रेमचन्द की कहानियों से प्रभावित होकर वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। इस सिलसिले में वे जेल भी गये। आजादी के बाद वे हिन्दी साहित्य सेवा में लग गये तथा उ.प्र. हिन्दी समिति के दस वर्षों तक सचिव रहे। भारतीय चरित कोश में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के महत्वपूर्ण व्यक्तियों का परिचय दिया गया है तथा कई लोगों के चित्र भी दिये गये हैं। पृष्ठों की संख्या एक हजार है।

सन् 1907 से लेकर 2025 तक की यात्रा में चरित्र कोशों की संख्या और कलेवर दोनों में काफी विस्तार हुआ, हिन्दी भाषा भी खासी परिष्कृत हुई, परन्तु संसार के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रारम्भ हुई इस यात्रा में हम भारतीय सीमा में बंधे रहे और यात्रा प्रारम्भ करने वाले पहले यात्री की पहचान भी हमारे पास नहीं है।

मदन कोश
(भाषा और चरित्र के नमूने)

अबुल फैजफैजी (प्रसिद्ध विद्वान) शेख मुबारिक नागौरीका बेटा तथा अब्बुल फजल का बड़ा भाई था। 14 वर्ष की अवस्था में अर्बी फारसी तुर्की भले प्रकार पढ़कर संस्कृत पढ़ने बनारस गया। जब पढ़कर पूर्ण विद्वान हुआ ब्राह्मण गुरु ने निज पुत्री इसको विवाहनी चाही, तब फैजी ने उससे सच्चा हाल कहा कि मैं मुसलमान हूँ। गुरु यह सुन शोकितहो फैजीसे बोला "जिस ग्रन्थ का चाहो अनुवाद करना, पर वेदों का अनुवाद न करना। अकबर ने गद्दी पर बैठने से 12 वर्ष पीछे फैजी को अपने दरबार में उच्च पद दिया। पश्चात फैजी ने अपने कनिष्ठ सहोदर को दरबार में पहुंचाया। फैजी की समान तत्व तथा ब्रह्मविद्या का ज्ञाता कोई दूसरा दरबार में न था। उससे अकबर तथा दरबार में और सबलोग प्रसन्न थे। अकबर ने उसको राजकवि के पद पर नियुक्त किया था। बेनुकतकुरान सुलेमान बिल्कीस, हफ्तकिश्वर, हफ्तपैकर, मसनवी नलदमन इत्यादि फारसी ग्रन्थ और बादशाह अकबरकी आज्ञानुसार रामायण,महाभारत, लीलावती, बीजगणित इत्यादि संस्कृत पुस्तकों का फारसी अनुवाद फैजी ने किया था और अथर्व वेद में अल्लोपनिषद् बनाकर मिलाया था। फैजी की तनख्वाह का अधिक भाग पुस्तकें खरीदने में खर्च होता था। स. ई.1599 में फैजी का देहांत हुआ। 4600 पुस्तकें उसके कुतुबखाने में निकलीं। भाषा में उसके बनाये दोहरे अनेक मिलते हैं। ऐसा तीव्र बुद्धि पुरुष था कि जो पुस्तक एक दफे पढ़ली याद हो गई।

कौसल्या-(महाराज रामचन्द्र की परम पूज्यमाता) इनके चरित्रों में धर्म और धीरज का पालन जो राम सरीखे पुत्र को वन जाते समय इन्होंने किया प्रधान है। ये उत्तर कौशल के राजा रविमंत की पुत्री थीं। रविमंत ने अपना राज्य दशरथजी को दहेज में दिया था।...........

सम्पर्क-योगेन्द्र नारायण, डी54/155-5 श्रीनगर कालोनी,
गुरुबाग, वाराणसी।

taste King™
Mint House, Nadesar, Varanasi

मुस्लिम समाज के तीन रत्न मोहानी सबसे महान

प्रस्तुति : ज़ाहिद ख़ान

मौलाना हसरत मोहानी के 150वें जयंती वर्ष पर हैदराबाद में सेमिनार सम्पन्न

'तेलंगाना प्रगतिशील लेखक संघ', 'तेलंगाना साहित्य अकादमी' और 'तेलंगाना उर्दू अकादमी' के संयुक्त तत्वावधान में हैदराबाद में एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। 'उर्दू हॉल', हिमायत नगर में आयोजित यह सेमिनार फ्रीडम फाइटर, जर्नलिस्ट, एडिटर और मक़बूल शायर मौलाना हसरत मोहानी पर केन्द्रित था। 2025 हसरत मोहानी का 150वॉं जयंती वर्ष और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का शताब्दी साल है। ज़ाहिर है कि इस साल को यादगार बनाने के लिए यह आयोजन खा़स तौर पर आयोजित किया गया था। सेमिनार में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों के अलावा हैदराबाद शहर के अदीब, समाजी, सियासी मेम्बर और स्टूडेंट्स ने बड़ी तादाद में शिरकत की। सेशन के आगाज़ से पहले प्रगतिशील लेखक संघ का झंडा फहराया गया। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष मंडल में प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पी. लक्ष्मीनारायण, संगठन के राष्ट्रीय महासचिव सुखदेव सिंह सिरसा, सचिव टी.एस. नटराजन, डॉ.मोहनदास, विनीत तिवारी, संगठन के अध्यक्ष मंडल के सदस्य नथमल शर्मा, पूनम सिंह और आंध्रा प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ के प्रदेश अध्यक्ष आर चंद्रशेखर रेड्डी, तेलंगाना प्रगतिशील लेखक संघ के प्रदेश अध्यक्ष आर वी रामाराव के अलावा पूर्व राज्य सभा मेम्बर अज़ीज़ पाशा शामिल थे।

सेशन में स्वागत भाषण तेलंगाना उर्दू प्रगतिशील लेखक संघ की प्रदेश अध्यक्ष डॉ.अवधेश रानी बावा ने, तो वहीं उद्घाटन भाषण पूर्व विधायक कॉमरेड चाडा वेंकट रेड्डी ने दिया। मुख्य भाषण पी.एस. तेलुगु यूनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर प्रोफेसर एस वी सत्यनारायण ने दिया। सेशन के विशिष्ट अतिथि तेलंगाना साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. नमोजी बालाचारी थे। इस सेशन में आंध्रा प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एतुकेरी प्रसाद का सम्मान भी किया गया। पूर्व राज्य सभा मेम्बर अज़ीज़ पाशा ने मौलाना हसरत मोहानी का याद करते हुए कहा, ''हसरत मोहानी की ज़िंदगी और उनके कारनामों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे हिंदुस्तान की मिली-जुली तहज़ीब के नुमाइंदे थे। संविधान सभा के मेम्बर थे और उन्होंने भारत विभाजन का विरोध किया।'' साल 2026 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के नब्बे साल पूरे हो रहे हैं, संगठन की विरासत को याद करते हुए, प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पी. लक्ष्मीनारायण ने कहा, ''अपनी स्थापना के बाद से ही संगठन को देश भर के प्रतिष्ठित लेखकों, बुद्धिजीवियों और राजनेताओं का समर्थन मिलता रहा है। साल 1938 में प्रगतिशील लेखक संघ के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में न सिर्फ़ पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू शामिल हुईं, बल्कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इसमें अपना लिखित वक्तव्य भेजा।''

प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सुखदेव सिंह सिरसा ने कहा, ''देश की आज़ादी में मौलाना हसरत मोहानी का बड़ा योगदान है। साल 1921 में उन्होंने 'इंक़लाब ज़िंदाबाद' का नारा दिया। इस नारे के साथ बाद में भगत सिंह ने 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' को और जोड़ दिया। बाद में यह नारे देश के कोने-कोने में गूँजे। आज़ादी के बाद भी इन नारों की प्रासंगिकता खत्म नहीं हुई है। साम्राज्यवाद के नये-नये चेहरे आज हमारे सामने आ रहे हैं। फ़ासिज्म और कार्पोरेट के खिलाफ़ भी हमें उसी तरह एकजुट होना पड़ेगा। जब भी इस तरह के हालात पैदा होंगे, इन नारों की प्रासंगिकता रहेगी।'' डॉ. सिरसा ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''आज हैदराबाद में हसरत मोहानी पर सेमिनार आयोजित हो रहा है। हमें मोहानी के साथ-साथ मखदूम मोहिउद्दीन को भी याद करना चाहिए। आज जब दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में जंग का माहौल बना हुआ है, तब उनकी नज़्म 'जाने वाले सिपाही से पूछो, वो कहॉं जा रहा है' खूब़ याद आती है। यह नज़्म युद्ध की भयावहता को दर्शाती है।'' कॉमरेड चाडा वेंकट रेड्डी ने कहा, ''फासिज्म ने हमारे देश को बहुत नुकसान पहुॅंचाया है। आज हमारी सांस्कृतिक भिन्नता और सामाजिक ताना-बाना सभी कुछ इसके निशाने पर है। ऐसे माहौल में हसरत मोहानी को याद करना इसलिए ज़रूरी है कि उन्होंने हमेशा राष्ट्रीय एकता की बात की। मौलाना होने के बावजूद उन्होंने कृष्ण भक्ति की नज़्में लिखीं।''

सेमिनार के उद्घाटन सत्र में तेलुगु भाषा की तीन किताबों के अलावा किताब 'बलराज साहनी एक समर्पित और सृजनात्मक जीवन' (गार्गी प्रकाशन, नई दिल्ली) का विमोचन भी हुआ। विमोचन के बाद 'बलराज साहनी एक समर्पित और सृजनात्मक जीवन' के सम्पादक ज़ाहिद ख़ान ने मुख्तसर में किताब की खा़सियत पर रौशनी डालते हुए कहा, 'किताब की खूब़ी

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पहले महासचिव पी.सी. जोशी का एक लंबा आलेख है, जो उन्होंने बलराज साहनी पर लिखा था। किताब में इसके अलावा बलराज साहनी के अज़ीज़ दोस्त ख़्वाजा अहमद अब्बास, जसवंत कंवल और बलराज साहनी के बेटे परीक्षित साहनी के लेख हैं, तो बलराज साहनी की कुछ तक़रीरें, मज़ामीन आदि भी शामिल हैं।' सेशन के आखिर में तेलंगाना प्रगतिशील लेखक संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. पल्लेरु वीरास्वामी ने सेशन में शामिल हुए सभी अतिथियों और श्रोताओं का धन्यवाद किया। उद्घाटन सत्र के बाद मौलाना हसरत मोहानी की शख़्सियत और उनके सियासी और अदबी कारनामों पर दो और सेशन हुए। जिसमें विद्वान वक्ताओं ने अपने महत्वपूर्ण वक्तव्य दिए। सेमिनार के दूसरे और अहम सेशन का सब्जेक्ट था, 'हसरत मोहानी और साहित्य'। इस सेशन की मुख्य अतिथि थीं–प्रोफ़ेसर कीर्तिमालिनी विठ्ठलराव जावले (डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मराठवाड़ा यूनीवर्सिटी, महाराष्ट्र) और दीगर वक्ताओं में शामिल थे–डॉ. मोहम्मद काशिफ़ (हैदराबाद यूनीवर्सिटी), प्रोफ़ेसर अर्शिया (हैदराबाद यूनीवर्सिटी), डॉ. रफ़िया सलीम (हैदराबाद यूनीवर्सिटी), श्रीमती महेजबीन, तेलंगाना प्रगतिशील लेखक संघ उर्दू की अध्यक्ष डॉ.अवधेश रानी बावा और लेखक–पत्रकार ज़ाहिद खा़न। सेशन में शामिल सभी वक्ताओं ने अपने–अपने लिखित वक्तव्य पढ़े, जो मौलाना हसरत मोहानी की शख़्सियत और उनके अदबी, समाजी और सियासी कारनामों को बड़े ही उम्दा तरीक़े से उजागर करते थे। अच्छी बात है कि ये सभी मज़ामीन एक–दूसरे के मौज़ूअ से मुख़्तलिफ़ थे। सामेईन ने इन मज़ामीन को खूब़ पसंद किया।

ज़ाहिद खा़न ने अपने मज़मून का आग़ाज़ कुछ इस अंदाज़ में किया,''जंग-ए-आज़ादी में सबसे अव्वल 'इंक़लाब ज़िंदाबाद' का जोशीला नारा बुलंद करना और हिंदुस्तान की मुकम्मल आज़ादी की मांग, महज़ ये दो बातें ही मौलाना हसरत मोहानी की बावक़ार हस्ती को बयॉं करने के लिए काफ़ी हैं। वरना उनकी शख़्सियत से जुड़े ऐसे अनेक क़िस्से और हैरत–अंगेज़ कारनामे हैं, जो उन्हें जंग-ए-आज़ादी के पूरे दौर और फिर आज़ाद हिंदोस्तॉं में उन्हें अज़ीम बनाते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनके बारे में कहा था, 'मुस्लिम समाज के तीन रत्न हैं और मुझे लगता है कि इन तीनों में मोहानी साहब सबसे महान हैं।'' उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''साल 1925 में मौलाना हसरत मोहानी का झुकाव कम्युनिज़्म की तरफ़ हो गया। यहॉं तक कि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के पहले सम्मेलन की नींव उन्होंने ही रखी। साल 1926 में कानपुर में हुई पहली 'कम्युनिस्ट कॉफ्रेंस' में मौलाना हसरत मोहानी ने ही स्वागत भाषण पढ़ा। जिसमें उन्होंने पूर्ण आज़ादी, सोवियत रिपब्लिक की तर्ज़ पर स्वराज की स्थापना और स्वराज स्थापित होने तक काश्तकारों और मज़दूरों के कल्याण और भलाई पर ज़ोर दिया। साल 1936 में जब लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की पहली कॉन्फ्रेंस हुई, तो मौलाना हसरत मोहानी सिर्फ़ एक दावत–नामे पर बिना किसी औपचारिकता के कानपुर से इस कान्फ्रेंस में हिस्सा लेने लखनऊ पहुँच गए।

अपनी तक़रीर में ना सिर्फ़ उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के घोषणा-पत्र और इसके मक़सद से रज़ामंदी ज़ाहिर की, बल्कि इस बात भी ज़ोर दिया कि 'अदब में आज़ादी की तहरीक की अक्कासी होनी चाहिए। प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े लेखकों को मज़दूरों, किसानों और तमाम पीड़ित इंसानों की पक्षधरता करना चाहिए। लेखक को ज़िंदगी के ज़्यादा महत्वपूर्ण और गंभीर मसलों की तरफ ध्यान देना चाहिए।''

अपनी इस तक़रीर में अदीब और नक़्क़ाद ज़ाहिद खा़न ने अक्टूबर 1945 हैदराबाद में आयोजित तरक़्क़ी–पसंद उर्दू अदीबों की 'कुल हिंद कॉन्फ्रेंस' का भी ज़िक्र किया, जिसमें मौलाना हसरत मोहानी ने न सिर्फ़ शिरकत की, बल्कि इस कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष–मंडल में भी वे शामिल थे। उन्होंने आगे कहा–''ग़ज़ल को दोबारा ज़िंदगी बख़्शने वाले और ग़ज़ल की आलीशान इमारत के पॉंच सुतून फ़ानी बदायूनी, असगर गोंडवी, फ़िराक़ गोरखपुरी और जिगर मुरादाबादी के साथ हसरत मोहानी भी एक अहम स्तंभ माने जाते हैं। मशहूर नक़्क़ाद रशीद अहमद सिद्दीक़ी ने मौलाना हसरत मोहानी पर लिखे अपने रेखाचित्र में एक साथ उनकी कई खूबियों को बयॉं करते हुए लिखा है, 'किसी से न दबने वाला, हर शख़्स से स्नेह करने वाला, ज़बान का दाता, शायरों का वली, ग़ज़ल का इमाम, अदब का ख़िदमत गुज़ार। कैसी सच्ची बात एक अज़ीज़ ने कही कि 'सियासत कोयले का कारोबार है जिसमें सभी का हाथ और बहुतों का मुँह काला होता है सिवाए हसरत के।'' ज़ाहिद खा़न ने अपने मज़मून में एक और खा़स बात का ज़िक्र करते हुए कहा–''देश का संविधान बनाने वाली कमेटी में मौलाना हसरत मोहानी शामिल थे। संविधान सभा के मेंबर और संसद सदस्य रहते, उन्होंने कभी वीआईपी सहूलियतें नहीं लीं। यहॉं तक कि वे संसद से तनख़्वाह या कोई भी सरकारी सहूलियत नहीं लेते थे। हसरत मोहानी, संविधान सभा के एक अदद ऐसे मेम्बर थे, जिन्होंने संविधान पर अपने दस्तखत़ नहीं किये, और वो इसलिए कि उन्हें लगता था कि देश के संविधान में मज़दूरों और किसानों की हुकूमत आने का कोई ठोस सबूत नहीं है।'' सेशन के समापन पर तेलंगाना प्रगतिशील लेखक संघ उर्दू की महासचिव निकहत आरा शाहीन ने सेमिनार में शामिल हुए सभी मुअज़्ज़िज़ मेहमानों और सामेईन का शुक्रिया अदा किया।

मोबाइल : 94254 89944

किशन महाराज

(जयंती 3 सितम्बर)

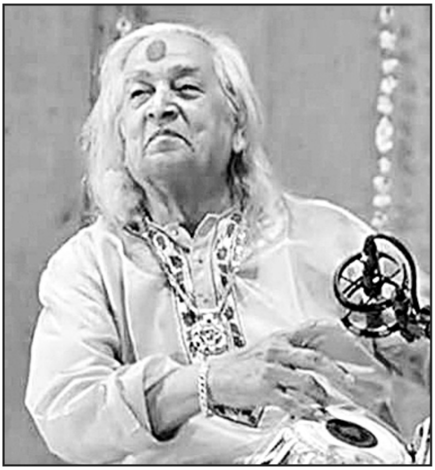

किशन महाराज का जन्म काशी (वाराणसी) के कबीरचौरा मुहल्ले में 3 सितम्बर 1923 को हुआ था। प्रारम्भ में इन्होंने अपने पिता पंडित हरि महाराज से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पिता के देहान्त के बाद चाचा पंडित कंठे महाराज ने उनकी शिक्षा का दायित्व सम्भाला। किशन महाराज के तबले की थाप के लोग दीवाने होने लगे। कुछ साल के अन्दर ही उस्ताद फैयाज खां, पंडित ओमकार ठाकुर, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, पंडित भीमसेन जोशी जैसे बड़े नामों के साथ उनकी संगत होने लगी। इतना ही नहीं नृत्य की दुनिया के महान हस्ताक्षर शंभू महाराज, सितारा देवी, नटराज गोपी कृष्ण, बिरजू महाराज के कार्यक्रमों में भी उन्होंने तबले पर संगत की। उन्होंने 1965 में ब्रिटेन में कॉमनवेल्थ कला समारोह के साथ ही कई अवसरों पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर दुनिया में ख्याति अर्जित की। युवावस्था में पंडित किशन महाराज ने कई फिल्मों में भी तबला वादन किया जिसमें नीचा नगर, आँधियाँ, बड़ी मां आदि फिल्में प्रमुख थी। उन्होंने बनारस में दूरदर्शन केन्द्र स्थापित करने के लिए भी आन्दोलन किया था। अपने बिंदास जीवन शैली के लिए चर्चित किशन महाराज के भीतर बनारसीपन रमा-बसा था। लुंगी कुर्ते में पूरे मुहल्ले का टहलान, पान के दुकान पर अड़ी उनकी दिनचर्या रही। बनारस घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक पंडित किशन महाराज को भारत सरकार ने वर्ष 1973 में पद्मश्री, 2002 में पद्म विभूषण से नवाजा। इसके अलावा संगीत नाटक अकादमी, काशी स्वर गंगा सम्मान, संगीत सम्राट जैसे अनेक सम्मान से विभूषित किये गये। इस महान तबला वादक का अवतरण आधी रात को हुआ था और आधी रात को ही 4 मई 2008 में इनका निधन भी हुआ। उनके जाने से भारत ने एक युगजयी संगीत का दिग्गज खो दिया।

नीरजा भनोट

(जयंती 7 सितम्बर)

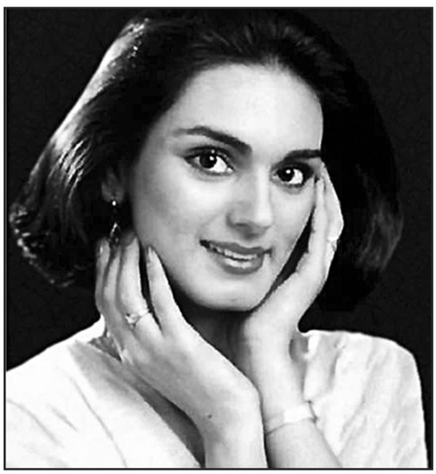

नीरजा भनोट का जन्म 7 सितम्बर 1963 को चंडीगढ़ पंजाब में हुआ था। इनके पिता हरीश भनोट मुम्बई में पत्रकारिता से जुड़े थे। नीरजा शिक्षा ग्रहण करने के बाद पैन एम एयरलाइन्स में विमान परिचारिका की नौकरी के लिए आवेदन किया और चुनी भी गयीं। बचपन से ही इनकी इच्छा आकाश में उड़ने की थी जो पूरी हुई। 5 सितम्बर 1986 को नीरज के जीवन की असली परीक्षा थी। पैन एम 73 विमान कराची पाकिस्तान के एयरपोर्ट पर 400 यात्रियों के साथ पायलट के इंतजार में खड़ा था, अचानक 4 आतंकवादियों ने पूरे विमान को गन प्वाइंट पर ले लिया। उन लोगों ने पाकिस्तान सरकार से जल्दी पायलट भेजने की मांग की, लेकिन सरकार नहीं मानी। वे अमेरिकी यात्रियों की पहचान के लिए नीरजा से सबका पासपोर्ट इकट्ठा करने को कहा। मौके की स्थिति को समझकर नीरजा ने 5 अमेरिकी यात्रियों के पासपोर्ट छिपा लिये और विमान का ईंधन खत्म होने का इंतजार करने लगी। 13 घंटे में ईंधन खत्म होते ही लाइट बुझी और नीरजा ने इमरजेन्सी डोर खोल दिया जिससे सभी यात्री नीचे उतर गये और कमाण्डो कार्यवाई में तीन आतंकी मार गिराये गये। तभी बच्चों के रोने की आवाज सुन नीरजा ने बच्चों को खोजा और नीचे ढकेल दिया तब तक चौथा आतंकी नीरजा के सामने आ गया और कई गोलियाँ दाग दी। नीरजा के इस बहादुरी पूर्ण बलिदार पर भारत सरकार ने उनको सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'अशोक चक्र' प्रदान किया और 2014 में डाक टिकट भी जारी किया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नीरजा का नाम हिरोइन आफ हाईजैक के तौर पर मशहूर हुआ। वर्ष 2005 में अमेरिका ने उन्हें जस्टिस फार क्राइम अवार्ड से नवाजा। नीरजा के नाम पर मुम्बई में घाटकोपर इलाके में चौराहे का नाम उनके नाम पर और पुरस्कार, फिल्म भी बनायी गयी है।

काका हाथरसी

(जयंती 18 सितम्बर)

काका हाथरसी का जन्म 18 सितम्बर

1906 को उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में हुआ था। इनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब प्लेग ने हजारों घरों को उजाड़ दिया था। इनके पिता की मृत्यु इनके जन्म के 15 दिन बाद प्लेग से ही हुई। आर्थिक तंगी से इनका नाता बचपन से ही जुड़ गया था। वैसे तो इनका असली नाम प्रभूलाल गर्ग था। जब इन्होंने एक नाटक में काका का किरदार निभाया तभी से काका के नाम से पुकारे जाने लगे। इनकी पहली कविता 'गुलदस्ता' इलाहाबाद में छपी। हास्यरस की अनेक कवितायें देश के पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी तो ये काका हाथरसी के रुप में प्रसिद्ध हुए। इन्हें हास्य व्यंग कवितों का पर्याय माना जाने लगा। बाद में इनकी अनेक कविता संग्रह प्रकाशित हुए जिसमें काका के प्रहसन, काका की फुलझड़ियाँ, काका के चुटकुले, जय बोलो बेईमान की, काका तरंग आदि प्रमुख हैं। काका का मंचीय कवियों में भी एक प्रमुख स्थान था। 1957 में लाल किले पर काव्य पाठकर अपनी छाप छोड़ी। 1985 में पद्मश्री, 1989 में अमेरिका के वाल्टीमौर में आनरेरी सिटीजन सम्मान से सम्मानित काका ने हिन्दी के प्रसार में अविस्मरणीय योगदान दिया है। हिन्दी कविता के महानतम रचनाकार काका का जन्म 18 सितम्बर को और अन्तिम यात्रा भी 18 सितम्बर 1995 को ही हुई। आपके नाम से चलाया गया काका हाथरसी पुरस्कार प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि को प्रदान किया जाता है।

भोला पासवान शास्त्री

(जयंती 21 सितम्बर)

भोला पासवान का जन्म बैरगाछी गाँव जिला पूर्णिया बिहार में 21 सितम्बर 1914 को हुआ था। बिहार के राजनीति का विदेह कहे जाने वाले भोला पासवान ने दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री की डिग्री ली जिसके कारण इनके नाम में शास्त्री लगा। बिहार के आठवें मुख्यमंत्री और तीन

बार पदभार ग्रहण करने वाले भोला पासवान शास्त्री के ईमानदार छवि की चर्चा आज भी होती है। पंडित जवाहर लाल नेहरु के करीबी रहे। इन्दिरा गाँधी ने इन्हें तीन बार मुख्यमंत्री और बाद में केन्द्र में मंत्री बनाया। अपने जीवन काल में इन्होंने कोई सम्पत्ति अर्जित नहीं की। सादगी और ईमानदारी के कारण अपने क्षेत्र में लोकप्रिय रहे। सीएम, राज्यसभा सदस्य और केन्द्रीय मंत्री बनने के बाद भी जमीन पर बैठने में कभी संकोच नहीं किया। मरे तो खाते में इतना पैसा भी नहीं था कि श्राद्धकर्म हो सके। विरंची पासवान जो इनके भतीजे थे उन्होंने ही शास्त्री जी को श्रद्धांजलि दी। शास्त्री जी को अपनी कोई संतान नहीं थी विवाहित जरुर थे पर पत्नी से अलग हो गये थे। 4 सितम्बर 1984 को पटना में तत्कालीन जिलाधीश ने श्राद्धकर्म करवाया था।

रामवृक्ष बेनीपुरी

(पुण्यतिथि 9 सितम्बर)

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसम्बर 1899 को मुजफ्फरपुर बिहार जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। बाद में मुजफ्फरपुर कालेज में दाखिला लिया। इसी समय महात्मा गांधी ने रौलट एक्ट के विरोध में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसमें बेनीपुरी कालेज छोड़कर आन्दोलन में कूद पड़े। प्रखर समाजवादी विचारक रामवृक्ष जी ने हजारी बाग जेल में बन्द जयप्रकाश नारायण को जेल से भगाने में भी अहम भूमिका निभाई। चिन्तक क्रान्तिकारी बेनीपुरी जी साहित्यकार, पत्रकार और सम्पादक के रुप में भी अविस्मरणीय हैं। हिन्दी साहित्य के शुक्लोत्तर युग के प्रसिद्ध साहित्यकार के रुप में इनको याद किया जाता है। इनकी प्रमुख रचनायें पतितों के देश में, आम्रपाली, माटी की मूरतें, निबन्ध संग्रह चिता के फूल, लाल तारा, कैदी की पत्नी, गेहूँ और गुलाब आदि, 'नाटक-सीता का मन संघमित्रा, तथागत' आदि।

सम्पादन-विद्यापति की पदावली प्रकाशित हुई हैं। आजादी के आन्दोलनों में 8 वर्षों तक जेल में रहने, साहित्य और देश सेवा के लिए बिहार सरकार से उनके नाम पर रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार भी दिया जाता है। बिहार विधानसभा के सदस्य, सादा जीवन और उच्च विचार के धनी रामवृक्ष बेनीपुरी जी का निधन 9 सितम्बर 1968 को मुजफ्फपुर बिहार में हो गया।

महन्त अवैद्यनाथ

(पुण्यतिथि 12 सितम्बर)

महन्त अवैद्यनाथ का जन्म 28 मई 1921 को उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जिले के कांडी गाँव में हुआ था। इनके पिता का

नाम राय सिंह विष्ट था। अवैद्यनाथ जी का बचपन का नाम कृपाल सिंह विष्ट था। महन्त अवैद्यनाथ हिन्दू धर्म की आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ सामाजिक जनजागरण को भी आगे बढ़ाया। गोरखनाथ मठ के पीठाधीश्वर के रुप में उन्होंने रामजन्मभूमि आन्दोलन को आगे बढ़ाया। हिन्दू धर्म के लिए उनके मन में अथाह पीड़ा थी। दक्षिण भारत के रामनाथ पुरम में अनुसूचित जाति के लोगों के सामूहिक धर्मान्तरण से वे काफी दुखी हुए थे। ऐसी घटना उत्तर भारत में न हो इसके लिए राजनीति में रहकर उनके कुटिल प्रयासों को असफल किये। भारतीय जनता पार्टी से जुड़े महन्त अवैद्यनाथ 1962, 1967, 1974 व 1977 में उत्तर प्रदेश विधानसभा में मानीराम सीट का प्रतिनिधित्व किया और 1970, 1989, 1991, 1996 में गोरखपुर से लोकसभा सदस्य रहे। उत्तराखण्ड के ही अपने शिष्य परिवार के सदस्य अजय सिंह विष्ट को दिक्षा देकर योगी आदित्यनाथ बना दिये जो अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और गोरखनाथ मठ की पीठाधीश्वर हैं। महन्त अवैद्यनाथ का निधन 12 सितम्बर 2014 को हुआ। उन्हें नाथ परम्परा के अनुसार समाधि दी गयी।

राजा रमन्ना

(पुण्यतिथि 24 सितम्बर)

राजा रमन्ना का जन्म 20 जनवरी 1925 को मैसूर राज्य के तुमकूर में तिप्तुर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम रमन्ना था। प्रारम्भिक शिक्षा बेंगलुरु के विशप काटन स्कूल से हुई। इन्होंने मद्रास क्रिस्चियन कालेज से भौतिक विषय में बीएससी की डिग्री अर्जित की। बाद में एमएससी संगीत और एम म्यूजिक की भी डिग्री ले ली। सन 1952 में राष्ट्र मण्डल छात्रवृत्ति मिली जिसके उपरान्त डाक्टरेट करने के लिए इंगलैण्ड चले गये। 1954 में परमाणु भौतिकी में डाक्टरेट पूरा किया। राजा रमन्ना भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु द्वारा प्रारम्भ किये गये परमाणु कार्यक्रम से जुड़ गये। वे भारत लौट आये और होमी जहाँगीर भाभा के नेतृत्व में भाभा एटामिक रिसर्च सेन्टर में वरिष्ठ तकनीकी दल में नियुक्त हुए।

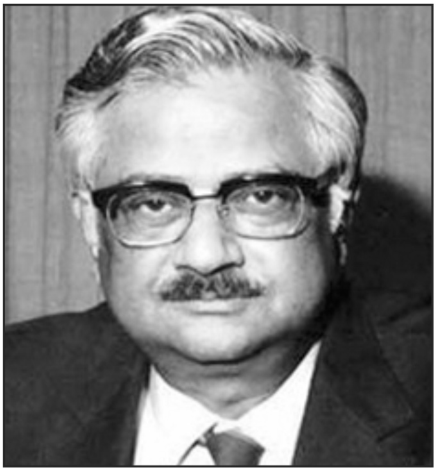

1974 में पहले परमाणु परीक्षण का नेतृत्व करने के बाद रमन्ना को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली और भारत सरकार ने उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया। 1978 में सद्दाम हुसैन ने इराक के लिए परमाणु बम बनाने का प्रस्ताव रखा था जिसे उन्होंने ठुकरा कर स्वदेश वापसी की थी। 1990 में वीपी सिंह सरकार में रक्षामंत्री बनाया गया। 1997 से 2003 तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे। भारत सरकार ने उन्हें 1968 में पद्मश्री, 1973 में पद्मभूषण, 1975 में पद्मविभूषण, 1963 में शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया। 24 सितम्बर 2004 को राजा रमन्ना ने अन्तिम साँस ली और परलोक सिधार गये।

सुदर्शन सिंह चक्र

(पुण्यतिथि 25 सितम्बर)

सुदर्शन सिंह चक्र का जन्म 14 नवम्बर 1911 को काशी क्षेत्र के भेलहटा गाँव के एक किसान राम किशोर सिंह के घर हुआ था। 1929 में ये कोलकाता चले गये। एक अंग्रेजी कम्पनी में काम करते हुए एक दिन विशुद्ध खादी के वस्त्र पहन कर चले गये तो अंग्रेजों ने कम्पनी से निकाल दिया। 1930 में चन्दौली में वे नमक आन्दोलन का नेतृत्व किये और यही साधू सन्तों की संगत में आकर धार्मिक पत्रकारिता करने लगे। धार्मिक, आध्यात्मिक विषयों पर 80 से ज्यादा पुस्तकें लिखकर साहित्य साधना की। वे कल्याण पत्रिका के सम्पादकीय विभाग से जुड़े। वे श्रीकृष्ण के साथ-साथ हनुमान जी के भी परम उपासक थे। स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती, प्रभूदत्त ब्रह्मचारी आदि के सम्पर्क में रहते भगवान श्रीकृष्ण की उपासना में लगे रहे। 25 सितम्बर 1989 को वे ब्रह्मलोक प्रयाण कर गये। उनके द्वारा रचित धार्मिक साहित्य युगों-युगों तक नैतिकता की प्रेरणा देता रहेगा।

इतिहास, संस्कृति व इत्र की नगरी बुरहानपुर

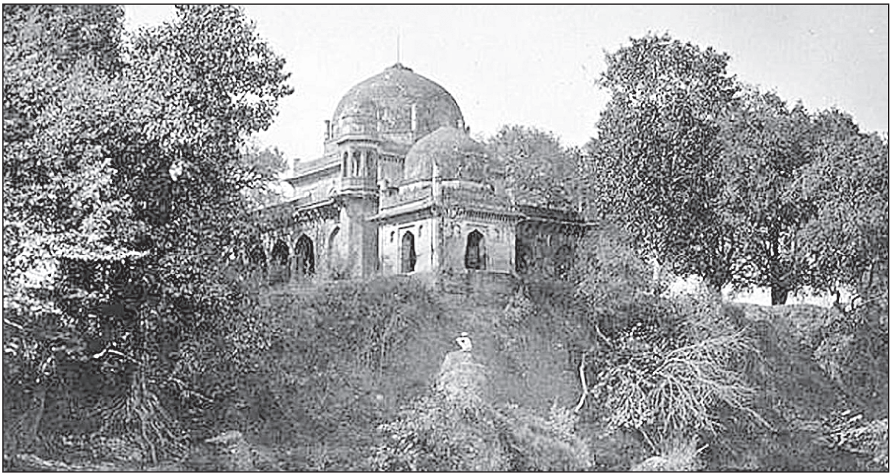

मध्य प्रदेश का बुरहानपुर एक ऐसा ऐतिहासिक नगर है जो स्थापत्य, संस्कृति, मुग़ल इतिहास और इत्र (परफ्यूम) निर्माण की समृद्ध परंपरा के लिए जाना जाता है। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह नगर अपने भीतर अनेक कहानियाँ समेटे हुए है– युद्धों की, प्रेम की, भक्ति की और कला की। यदि आप इतिहास प्रेमी हैं या अद्भुत मुग़ल वास्तुकला देखना चाहते हैं, तो बुरहानपुर आपके लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल है।

बुरहानपुर का ऐतिहासिक परिचय

बुरहानपुर की स्थापना 14वीं शताब्दी में फारूक़ी सुल्तानों ने की थी, लेकिन इसे ख्याति मिली मुग़ल शासन के दौरान। बुरहानपुर को मुग़ल साम्राज्य ने एक प्रमुख सैनिक केंद्र और शाही विश्रामगृह के रूप में विकसित किया। यहीं से शाहजहाँ की पत्नी मुमताज़ महल की मृत्यु हुई थी, जिनकी याद में बाद में आगरा में ताजमहल का निर्माण हुआ।

बुरहानपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थल

1. शाही क़िला (शाही महल)

बुरहानपुर का सबसे प्रमुख आकर्षण। यह क़िला नर्मदा नदी के किनारे स्थित है और इसे फारूकी सुल्तानों ने बनवाया था। इसमें मुग़ल शैली की नक्काशी, दीवार चित्र और सुंदर उद्यान देखने को मिलते हैं। यहीं पर मुमताज़ महल ने अंतिम साँसें ली थीं।

2. बड़ी दरगाह

यह सूफी संत हज़रत सैयद ज़ैन-उल-आबिदीन शाह की दरगाह है। यहाँ हर साल उर्स मेला आयोजित होता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। यह स्थल बुरहानपुर की धार्मिक सहिष्णुता और सूफी संस्कृति का प्रतीक है।

3. धरमपुरी और असिरगढ़ क़िला

बुरहानपुर के समीप स्थित असिरगढ़ क़िला एक विशाल और प्राचीन दुर्ग है, जिसे 'दक्षिण का द्वार' कहा जाता है। इसकी दीवारें और गुप्त सुरंगें इसे एक रोमांचक स्थल बनाती हैं।

4. हामिदिया मस्जिद और जामा मस्जिद

ये मस्जिदें मुग़ल वास्तुकला के सुंदर उदाहरण हैं, जिनमें सुंदर मेहराब, मीनारें और नक्काशी देखने को मिलती है।

5. मुमताज़ महल का मूल मक़बरा (अहूखाना)

यह वह स्थल है जहाँ मुमताज़ महल का पार्थिव शरीर आगरा ले जाने से पहले रखा गया था। आज भी यहाँ की दीवारों पर उस काल की मौन गूंज सुनाई देती है।

इत्र और कारीगरी का केंद्र

बुरहानपुर को 'इत्रों की नगरी' भी कहा जाता है। यहाँ पारंपरिक तरीके से गुलाब, केवड़ा और चंदन से इत्र बनाए जाते हैं। साथ ही, यहां की बुनाई कला (हैंडलूम टेक्सटाइल) भी प्रसिद्ध है, विशेष रूप से हिमरू और मशरू वस्त्र।

धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता

यहाँ हिंदू, मुस्लिम, जैन और सिख समुदायों के धार्मिक स्थल मिलते हैं, जो इसकी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। नर्मदा किनारे का गोस्वामी तुलसीदास घाट और सिंधी समाज का बड़ा मंदिर भी दर्शनीय हैं।

कैसे पहुँचे?

निकटतम हवाई अड्डाः इंदौर (180 किमी)

रेलवे स्टेशनः बुरहानपुर जंक्शन, जो कई प्रमुख ट्रेनों से जुड़ा है

सड़क मार्गः इंदौर, खंडवा और जलगांव से बस या टैक्सी द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है

ठहरने की व्यवस्था

बुरहानपुर में हर बजट के अनुसार होटल, लॉज और गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा संचालित होटल भी यहाँ मौजूद हैं।

यात्रा का सर्वोत्तम समय

नवंबर से फरवरी का समय बुरहानपुर घूमने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है, जब मौसम ठंडा और सुहावना होता है।

बुरहानपुर एक ऐसा स्थल है, जहाँ इतिहास केवल किताबों में नहीं, दीवारों, दरवाज़ों और हवाओं में बसा हुआ है। यह नगर न केवल स्थापत्य प्रेमियों और इतिहासकारों के लिए स्वर्ग है, बल्कि एक आम यात्री के लिए भी शांति, भक्ति और सुगंध से भरपूर अनुभव प्रदान करता है। एक बार की यात्रा आपको मुग़ल काल की भव्यता, सूफी परंपरा की गहराई और भारतीय विविधता की सुंदरता से परिचित करा देगी। ●

गजब का निखार लाएं टमाटर स्क्रब फेशियल

आजकल की व्यस्त जिंदगी में किसी के पास पार्लर जाने का समय नहीं होता है, लेकिन लोगों को इंस्टेंट ग्लो भी चाहिए होता है। कई बार ऐसा होता है कि हमें अचानक से कहीं किसी फंक्शन में जाना होता है तो स्किन का ग्लो खत्म हो जाता है। वहीं कई बार बाहर जाने का भी मन नहीं करता है। अगर आपके साथ भी ऐसा होता है, तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि आप बिना पार्लर जाए चेहरे पर चमक लाना चाहते हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको टमाटर के स्क्रब के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसको लगाकर आप अपनी स्किन को पार्टी में जाने से पहले ग्लोइंग स्किन पा सकते हैं।

टमाटर का स्क्रब फेशियल

टमाटर स्क्रब फेशियल बनाना बहुत आसान है। इसको बनाने के लिए आपको अधिक चीजों की जरूरत नहीं होगी। इसके लिए सबसे पहले दो देसी टमाटर की प्यूरी बना लें। फिर कपड़े की मदद से इस पेस्ट को छान लें। फिर इस रस में एक चम्मच आटे का चोकर और एक चम्मच मैदा मिलाएं। इन तीनों चीजों से आपका स्क्रब बनकर तैयार हो जाएगा।

ऐसे करें स्क्रब फेशियल

मसाज फेशियल का दूसरा स्टेप होता है। इसके लिए टमाटर की प्यूरी लें और फिर इसमें 1 चम्मच एलोवेरा जेल, 1 चम्मच हंग कर्ड और 1 चम्मच मिल्क पाउडर मिलाएं। इन सभी चीजों को अच्छे से मिक्स करें और फिर फेस पर लगाएं। ऊपर की ओर आउटवर्ड डायरेक्शन में मसाज करें। फिर आखिरी में 15 मिनट बाद ठंडे पानी से चेहरे को वॉश कर लें।

इंग्रीडिएंट्स के लाभ

टमाटर हमारे चेहरे से टैनिंग को हटाने का काम करता है और ग्लो लाता है। साथ ही यह पोर्स को भी टाइट करता है।

वहीं आटे का चोकर एक नेचुरल एक्सफोलिएटर है, यह स्किन को साफ और मुलायम बनाता है।

हंग कर्ड स्किन को नमी और ठंडक देने का काम करता है।

एलोवेरा जेल हमारी स्किन को हाइड्रेट करता है और यह जलन और मुंहासों से भी राहत दिलाता है।

मिल्क पाउडर एक नेचुरल ब्लीच की तरह काम करता है और स्किन टोन को भी बेहतर बनाता है।

घर की ज्वेलरी से पाएं नया ग्लैमरस लुक

जब भी खुद को स्टाइल करने की बात आती है, तो हम सभी अपने एक्सेसरीज और आउटफिट पर अधिक फोकस रहते हैं। लेकिन एक्सेसरीज और आउटफिट के साथ हेयरस्टाइल भी बहुत मायने रखता है। लड़कियां तरह-तरह के हेयरस्टाइल करना पसंद करती हैं। लेकिन अगर आप हेयर स्टाइल को एक नया ट्विस्ट देना चाहती हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आप अपनी ज्वेलरी को अपने लुक का हिस्सा बना सकती हैं। ऐसा करने से आपका पूरा लुक ग्लैमरस नजर आएगा।

बन पिन की तरह कैरी करें झुमका- अगर कान का एक झुमका खो गया है, तो आपके परेशान होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि आप इसकी मदद से अपने हेयर स्टाइल को एक न्यू लुक दे सकती हैं। आप झुमके को बन पिन की तरह भी इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर आप किसी पार्टी या फिर फंक्शन में जा रही हैं, तो आप बन बनाकर झुमके का हुक अंदर की तरफ फंसा लें। इस तरह से आपके हेयर स्टाइल को नया ट्विस्ट मिल जाएगा।

हेयर चेन की तरह कैरी करें चेन इयररिंग्स- अगर आपके पास चेन इयररिंग्स हैं, तो आप इसको अपने हेयर स्टाइल का हिस्सा बना सकती हैं। ओपन वेव्स लुक या फिर साइड ब्रेड हेयरस्टाइल के साथ चेन इयररिंग्स काफी अच्छी लगेगी। जब आप साइड से चेन वाले इयररिंग्स को पिन करती हैं तो इससे हेयर चेन जैसा लुक आएगा।

ऐसे पहनें मांग टीका- हम सभी बालों के बीच मांग निकालकर मांगटीका को पहनते हैं। लेकिन जरूरी नहीं है कि आप हर इसी तरह पहनें। आप इसको साइड पार्टिंग में क्लिप की तरह भी इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर आप एथनिक आउटफिट कैरी कर रही हैं और उसके साथ मैसी बन हेयर स्टाइल बनाएं, फिर उसके ऊपर मांगटीका लगाएं।

आधुनिक कृषि प्रसारः उत्पादकता व समृद्धि की कुंजी

डॉ. पंकज कुमार सिन्हा

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का आधार कृषि रहा है। देश की लगभग 60% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। यह न केवल लाखों लोगों की आजीविका का स्रोत है, बल्कि खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण विकास और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। हालांकि, बदलते समय, जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण ने कृषि क्षेत्र के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। इन चुनौतियों से निपटने और किसानों को सशक्त बनाने में आधुनिक कृषि प्रसार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह न केवल उत्पादकता बढ़ाने का साधन है, बल्कि ग्रामीण समृद्धि और टिकाऊ विकास की कुंजी भी है। आधुनिक कृषि प्रसार एक ऐसी प्रक्रिया है, जो किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकों, और बाजार की जानकारी से जोड़ती है। यह परंपरागत कृषि प्रसार से भिन्न है, क्योंकि इसमें डिजिटल तकनीकों, नवाचारों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य किसानों को शिक्षित करना, उनके कौशल को बढ़ाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। आधुनिक कृषि प्रसार केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसानों को खेती के नए तरीकों, टिकाऊ प्रथाओं और बाजार के अवसरों से जोड़कर उनकी आय और जीवन स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। डिजिटल तकनीक आधुनिक कृषि प्रसार का एक प्रमुख स्तंभ है। आज के युग में, स्मार्टफोन और इंटरनेट ने ग्रामीण भारत में भी अपनी पैठ बनाई है। 'किसान सुविधा', 'एग्रीमीडिया', और 'मेरा किसान' जैसे मोबाइल एप्लिकेशन किसानों को मौसम की सटीक जानकारी, फसल प्रबंधन के तरीके, बीज और उर्वरक की उपलब्धता, और बाजार मूल्य जैसे महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी क्षेत्र में बारिश की संभावना है, तो किसान इन एप्लिकेशनों के माध्यम से पहले से सूचित होकर अपनी फसलों की सिंचाई या कटाई की योजना बना सकते हैं। इसके अलावा, ड्रोन और सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग खेतों की निगरानी, मिट्टी की उर्वरता का विश्लेषण, और कीटों के प्रकोप की पहचान में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। ड्रोन की मदद से किसान अपने खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव अधिक प्रभावी और कम खर्चीले तरीके से कर सकते हैं। किसानों का प्रशिक्षण और जागरूकता आधुनिक कृषि प्रसार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। भारत में कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठन, जैसे कृषि विज्ञान केंद्र (ख्न्ख) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (र्घ्ँ), किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन कार्यक्रमों में जैविक खेती, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई, एकीकृत कीट प्रबंधन, और फसल विविधीकरण जैसे विषयों पर जोर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, जैविक खेती के माध्यम से किसान रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम कर सकते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और उत्पाद लागत भी कम होती है। ये प्रशिक्षण न केवल तकनीकी ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि किसानों में आत्मविश्वास और नवाचार की भावना को भी जागृत करते हैं। कई किसानों ने इन प्रशिक्षणों के बाद अपनी पारंपरिक खेती को आधुनिक और टिकाऊ प्रथाओं में बदलकर अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है। बाजार से जुड़ाव आधुनिक कृषि प्रसार का एक और महत्वपूर्ण आयाम है। परंपरागत रूप से, किसानों को अपनी उपज बेचने में मध्यस्थों की भूमिका के कारण कम लाभ मिलता था। लेकिन आधुनिक कृषि प्रसार ने इस स्थिति को बदल दिया है। ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) जैसे डिजिटल मंच किसानों को अपनी उपज को सीधे खरीदारों तक पहुँचाने में मदद करते हैं। इससे न केवल उनकी आय बढ़ती है, बल्कि मध्यस्थों पर निर्भरता भी कम होती है। इसके साथ ही, किसान उत्पादक संगठन और सहकारी समितियाँ किसानों को सामूहिक रूप से बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करने में सक्षम बनाती हैं। उदाहरण

के लिए, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में कई इइ्ध ने किसानों को एकजुट करके उनकी उपज को बड़े बाजारों और निर्यातकों तक पहुँचाया है, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आधुनिक कृषि प्रसार का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है। जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता में कमी, और जल संसाधनों का क्षरण आज के समय में कृषि के लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं। आधुनिक प्रसार सेवाएँ किसानों को टिकाऊ खेती की प्रथाओं, जैसे जल संरक्षण, जैविक खाद का उपयोग, और कम रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग, के बारे में जागरूक करती हैं। उदाहरण के लिए, ड्रिप इरिगेशन और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकें जल के उपयोग को कम करती हैं और फसलों की उत्पादकता बढ़ाती हैं। इसके अलावा, फसल चक्रण और मिश्रित खेती जैसी प्रथाएँ मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करती हैं। ये प्रयास न केवल पर्यावरण की रक्षा करते हैं, बल्कि दीर्घकालिक रूप से किसानों की लागत को भी कम करते हैं। हालांकि, आधुनिक कृषि प्रसार के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट कनेक्टिविटी की अनुपलब्धता, और छोटे और सीमांत किसानों तक संसाधनों की सीमित पहुँच प्रमुख बाधाएँ हैं। कई किसान अभी भी नई तकनीकों को अपनाने में **हिचकिचाते हैं, क्योंकि उनके पास पर्याप्त** संसाधन या जानकारी नहीं होती। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे, जैसे बिजली और इंटरनेट, की कमी भी एक बड़ी समस्या है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार, गैर-सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्र को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार, और सस्ती तकनीकों का विकास इन समस्याओं का समाधान कर सकता है।

निष्कर्षतः, आधुनिक कृषि प्रसार भारतीय कृषि को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का एक सशक्त माध्यम है। यह परंपरागत ज्ञान और आधुनिक तकनीकों के बीच एक सेतु का काम करता है, जो किसानों को सशक्त **बनाता है और देश की खाद्य सुरक्षा को** मजबूत करता है। डिजिटल तकनीकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और बाजार से जुड़ाव के माध्यम से यह किसानों की उत्पादकता और आय को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। साथ ही, यह पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और टिकाऊ कृषि प्रणाली सुनिश्चित करता है। यदि इन प्रयासों को और व्यापक और समावेशी बनाया जाए, तो आधुनिक कृषि प्रसार निश्चित रूप से ग्रामीण भारत के समग्र विकास और समृद्धि की कुंजी साबित होगा।

वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान,
झारखण्ड

कृषि उद्यमिता : स्टार्टअप्स के साथ खेती का भविष्य

डॉ. पंकज कुमार ओझा
असिस्टेंट प्रोफेसर (कृषि प्रसार) बाँदा
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा (उ. प्र.)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने का आधार कृषि रहा है। लाखों लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर हैं, और यह देश की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास का मूलमंत्र है। लेकिन, बदलते समय, जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या, और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण ने कृषि क्षेत्र के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। इन चुनौतियों से निपटने और खेती को अधिक उत्पादक, टिकाऊ, और लाभकारी बनाने में कृषि उद्यमिता और स्टार्टअप्स एक क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं। एग्री-स्टार्टअप्स न केवल नवाचारों को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि किसानों को सशक्त बनाकर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करके खेती के भविष्य को नई दिशा दे रहे हैं। कृषि उद्यमिता का अर्थ है खेती से संबंधित नवाचारों और व्यावसायिक दृष्टिकोण को अपनाकर इसे एक लाभकारी और टिकाऊ उद्यम में बदलना। परंपरागत रूप से, भारत में खेती को एक जीवन-यापन का साधन माना जाता रहा है, लेकिन एग्री-स्टार्टअप्स ने इसे एक आधुनिक उद्यम के रूप में स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। ये स्टार्टअप्स तकनीक, डेटा विश्लेषण, और नवीन व्यापार मॉडल का उपयोग करके खेती की पूरी मूल्य श्रृंखला–बुवाई से लेकर बाजार तक–को बदल रहे हैं। चाहे वह डिजिटल प्लेटफॉर्म हों, स्मार्ट खेती की तकनीकें हों, या बाजार से सीधा जुड़ाव, ये स्टार्टअप्स किसानों को नई संभावनाओं से जोड़ रहे हैं। डिजिटल तकनीक एग्री-स्टार्टअप्स की रीढ़ है। आज के दौर में, स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण भारत तक विस्तारित हो रही है, और स्टार्टअप्स इसका लाभ उठा रहे हैं। उदाहरण के लिए, 'डिजिटल ग्रीन' और 'कृषि जागरण' जैसे प्लेटफॉर्म किसानों को वीडियो-आधारित प्रशिक्षण और वास्तविक समय में जानकारी प्रदान करते हैं। ये प्लेटफॉर्म मौसम की भविष्यवाणी, फसल प्रबंधन, और कीट नियंत्रण जैसे विषयों पर सटीक और स्थानीयकृत जानकारी देते हैं। इसी तरह, 'निन्जाकार्ट' और 'क्रॉपइन' जैसे स्टार्टअप्स डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके किसानों को उनकी फसलों की निगरानी, मिट्टी की उर्वरता का विश्लेषण, और उपज की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करते हैं। ड्रोन और सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग भी तेजी से बढ़ रहा है, जिससे खेतों की निगरानी और कीटनाशक छिड़काव अधिक प्रभावी और कम खर्चीला हो गया है। एग्री-स्टार्टअप्स का एक प्रमुख योगदान है किसानों को बाजार से सीधे जोड़ना। परंपरागत रूप से, मध्यस्थों की भूमिका के कारण किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था।

लेकिन 'बिगहाट' और 'देहात' जैसे स्टार्टअप्स ने इस समस्या का समाधान किया है। ये प्लेटफॉर्म किसानों को सीधे खरीदारों, जैसे कि खुदरा विक्रेताओं और निर्यातकों, से जोड़ते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है। इसके अलावा, ये स्टार्टअप्स किसानों को बीज, उर्वरक, और अन्य कृषि आदानों की आपूर्ति भी करते हैं, जिससे उनकी लागत कम होती है। 'एग्रीबाजार' जैसे डिजिटल मार्केटप्लेस किसानों को अपनी उपज को ऑनलाइन

बेचने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे बेहतर कीमत प्राप्त कर सकते हैं। कृषि उद्यमिता का एक और महत्वपूर्ण पहलू है टिकाऊ खेती को बढ़ावा देना। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण के दौर में, टिकाऊ कृषि प्रथाएँ अत्यंत आवश्यक हैं। कई स्टार्टअप्स, जैसे 'किसान राजा' और 'एग्रोस्टार', किसानों को जैविक खेती, जल संरक्षण, और कम रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की तकनीकों से अवगत करा रहे हैं। उदाहरण के लिए, ड्रिप इरिगेशन और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकों को बढ़ावा देने वाले स्टार्टअप्स न केवल जल की बचत करते हैं, बल्कि फसलों की उत्पादकता भी बढ़ाते हैं। 'सॉलट्यूड' जैसे स्टार्टअप्स सौर ऊर्जा आधारित उपकरण प्रदान करते हैं, जो किसानों को बिजली की लागत कम करने और पर्यावरण-अनुकूल खेती अपनाने में मदद करते हैं। एग्री-स्टार्टअप्स का प्रभाव केवल किसानों तक सीमित नहीं है; ये ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत कर रहे हैं। ये स्टार्टअप्स स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन कर रहे हैं, खासकर युवाओं और महिलाओं के लिए। उदाहरण के लिए, कई स्टार्टअप्स ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करके उन्हें अपने प्लेटफॉर्म पर एजेंट के रूप में नियुक्त करते हैं, जो किसानों को तकनीकी सहायता और उत्पाद प्रदान करते हैं। इसके अलावा, महिला किसानों को सशक्त बनाने के लिए कई स्टार्टअप्स विशेष पहल कर रहे हैं, जैसे कि 'महिंद्रा कृषि सॉल्यूशंस' द्वारा संचालित कार्यक्रम, जो महिलाओं को कृषि उद्यमिता में प्रशिक्षित करते हैं। हालांकि, एग्री-स्टार्टअप्स के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, और छोटे और सीमांत किसानों तक पहुँच की सीमाएँ प्रमुख बाधाएँ हैं। कई किसान अभी भी नई तकनीकों को अपनाने में हिचकिचाते हैं, क्योंकि उनके पास पर्याप्त संसाधन या जानकारी नहीं होती।

इसके अलावा, स्टार्टअप्स के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्केल करना और लागत प्रभावी समाधान प्रदान करना एक जटिल चुनौती है। इन समस्याओं से निपटने के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। सरकार द्वारा स्टार्टअप्स के लिए अनुदान, कम ब्याज दरों पर ऋण, और डिजिटल बुनियादी ढाँचे के विकास जैसे कदम इन चुनौतियों को कम कर सकते हैं। भारत में एग्री-स्टार्टअप्स का भविष्य उज्ज्वल है। सरकार की 'स्टार्टअप इंडिया' पहल और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान ने कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई अवसर प्रदान किए हैं। इसके अलावा, निवेशकों का बढ़ता रुझान और तकनीकी नवाचारों की स्वीकार्यता ने इस क्षेत्र को और गति दी है। हाल के वर्षों में, भारत में एग्री-टेक स्टार्टअप्स में निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो इस बात का संकेत है कि यह क्षेत्र न केवल आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी एक सशक्त माध्यम है।

निष्कर्षतः, कृषि उद्यमिता और एग्री-स्टार्टअप्स भारतीय खेती के भविष्य को नया आकार दे रहे हैं। ये स्टार्टअप्स न केवल किसानों की उत्पादकता और आय बढ़ा रहे हैं, बल्कि टिकाऊ खेती, ग्रामीण रोजगार, और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा दे रहे हैं। डिजिटल तकनीकों, बाजार से जुड़ाव, और नवाचारों के माध्यम से ये स्टार्टअप्स परंपरागत खेती को एक आधुनिक और लाभकारी उद्यम में बदल रहे हैं। यदि इन प्रयासों को और अधिक समावेशी और स्केलेबल बनाया जाए, तो एग्री-स्टार्टअप्स निश्चित रूप से भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और खेती के भविष्य को उज्ज्वल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। ●

क्यों होती है पीपल की पूजा?

भारत की संस्कृति और परंपराओं में पेड़ों को हमेशा पूजनीय स्थान मिला है। खासकर पीपल का पेड़, जिसे सनातन धर्म में दिव्यता का प्रतीक माना गया है। पीपल को 'वृक्षों का राजा' कहा जाता है और इसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं का वास माना जाता है। इसकी पूजा करना और उसकी परिक्रमा लगाना सिर्फ धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे छिपा है एक गहरा वैज्ञानिक और स्वास्थ्य संबंधी कारण, जिसे समझना आज के समय में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

धार्मिक मान्यताएं और वैज्ञानिक आधार

पीपल के पेड़ को धार्मिक रूप से अत्यंत पवित्र माना जाता है। ग्रंथों में इसे 'बोधिवृक्ष' भी कहा गया है, जिसके नीचे बैठकर भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। शनिवार के दिन पीपल की पूजा का विशेष महत्व है, क्योंकि इसे शनिदेव से भी जोड़ा जाता है। मान्यता है कि पीपल की पूजा करने से शनि दोष दूर होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

लेकिन, इन धार्मिक मान्यताओं के पीछे एक ठोस वैज्ञानिक आधार भी है। पीपल एकमात्र ऐसा पेड़ है जो चौबीसों घंटे ऑक्सीजन छोड़ता है। जहां अधिकांश पेड़ रात में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, वहीं पीपल दिन-रात ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है, जिससे इसके आसपास की वायु शुद्ध और प्राणवायु से भरपूर रहती है। सुबह के समय पीपल के नीचे बैठकर ध्यान या प्राणायाम करने से व्यक्ति को शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है, जो उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह फेफड़ों को मजबूत करता है, रक्त संचार में सुधार करता है और मन को शांति प्रदान करता है।

पीपल के पेड़ में कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। इसकी छाल, पत्ते और फल का उपयोग विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों में किया जाता है। यह त्वचा रोगों, पाचन संबंधी समस्याओं और श्वसन संबंधी बीमारियों में फायदेमंद माना जाता है। इसकी छाया भी गर्मी में शीतलता प्रदान करती है, जो इसके आसपास के वातावरण को सुखद बनाती है।

भूत-प्रेत की धारणा का कारण

कुछ मान्यताओं के अनुसार, पीपल के पेड़ के पास भूत-प्रेत का वास माना जाता है। यह धारणा अक्सर लोगों को पीपल के पेड़ के पास जाने से रोकती है, खासकर रात के समय। पीपल के पेड़ पर आत्माओं के वास की मान्यता के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि अंतिम संस्कार के बाद अस्थियों को गांव में आज भी घर में नहीं लाया जाता, बल्कि उन्हें पीपल के पेड़ पर लटका दिया जाता है। इसी कारण यह धारणा बन गई कि मृत व्यक्ति की आत्मा पीपल के पेड़ में वास करती है।

लेकिन, इसके पीछे कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है। यह केवल एक लोकमान्यता है जो शायद लोगों को रात में पेड़ों के पास जाने से रोकने या किसी अन्य सामाजिक कारण से उत्पन्न हुई हो। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पीपल का पेड़ अपने गुणों के कारण सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है, न कि नकारात्मक ऊर्जा का।

सितम्बर मास का राशिफल

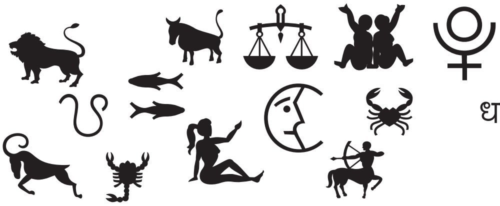

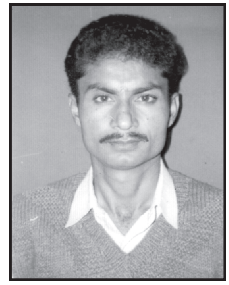

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- यह माह आपके लिए अच्छा है। मांगलिक कार्य की रुपरेखा बनेगी। मन खुश रहेगा। करोबार बेहतर रहेंगे। व्यवसाय से नियमित आय होगी। विश्वास के साथ कार्य सम्पन्न करेंगे। आपकी जिम्मेदारी संभालने के लिए कोई विश्वास पात्र मिल जायेगा। शेयर आदि से अच्छा लाभ होगा। दिनचर्या अनुकूल रहेगी। दिनांक 2, 7, 13, 21 नेष्ट हैं।

वृष- यह माह आपके लिए अच्छा है। कुछ नया करने का अवसर मिलेगा और यह आपको खुशी देगा। कार्य क्षेत्र में किए गए प्रयास सफल होंगे। खूब व्यस्तता रहेगी। नये-पुराने सहयोगी काम आएंगे। लेन-देन से बचना अच्छा रहेगा। तनाव से राहत मिलेगी। स्वयं के प्रयास से बिगड़े कार्य बनेंगे। मासान्त में परिवार पर व्यय बढ़ेगा। दिनांक 2, 10, 23, 25 नेष्ट हैं।

मिथुन- यह माह आपके लिए अच्छा है। मन मौज-मस्ती में लगा रहेगा। सामाजिक स्थिति ठीक रहेगी। राजनैतिक प्रभाव बढ़ेगा। आर्थिक क्षेत्र की परेशानियाँ कम हो जायेंगी। दैवीय कृपा बनी रहेगी। प्रत्येक प्रयास सफल होंगे। लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा। कार्यों के प्रति उत्साह बना रहेगा। माता का स्वास्थ्य चिन्तित करेगा। घर में शुभ कार्य सम्पन्न होंगे। दिनांक 2, 5, 12, 23 नेष्ट हैं।

कर्क- यह माह आपके लिए मध्ययोत्तम है। दौड़-धूप करनी पड़ेगी। किसी कानूनी पचड़े में उलझे रह सकते हैं। आध्यात्म में रूचि बढ़ेगी और दार्शनिक मूड बनेगा। धनागमन होता रहेगा। सरकारी कर्मचारियों को विशेष लाभ होगा। व्यय में वृद्धि होगी। शत्रु पराजित होंगे। पुराना रोग उभर सकता है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से उचट सकता है। दिनांक 2, 9, 21, 30 नेष्ट हैं।

सिंह- यह माह आपके लिए ठीक है। धन के निवेश के लिए समय अच्छा है। बचत पत्र, बाण्ड, शेयर खरीद सकते हैं। परिवार का सहयोग मिलेगा। मित्र अनुकूल रहेंगे, निजी सम्बन्धों का लाभ मिलेगा। कार्य-व्यापार में प्रगति होगी। किसी से धोखा भी मिल सकता है। स्वास्थ्य कम ठीक रहेगा। प्रयत्न करेंगे तो सफलता मिलेगी। मासान्त ठीक है। दिनांक 1, 10, 29 नेष्ट हैं।

कन्या- यह माह आपके लिए सामान्य है। विरोधी सक्रिय होंगे और मानसिक खिन्नता बढ़ेगी। स्वास्थ्य ढीला रहेगा। पुराने रोगियों के लिए समय ठीक नहीं है। सभी महत्वपूर्ण कार्यों में परेशानी होगी। कार्य-व्यापार मध्यम रहेगा। धन के लेन-देन में सतर्क रहना जरुरी है। मासान्त में तनाव से राहत मिलेगी। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। सम्मानित लोगों से सहयोग मिलेगा। दिनांक 1, 8, 19, 28 नेष्ट हैं।

तुला- आपके लिए माह अच्छा है। किन्तु प्रत्येक दिशा में सावधानी रखनी पड़ेगी। भाग्य का साथ मिलेगा। कार्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। द्वितीय सप्ताह शुभ समाचार लेकर आयेगा। अच्छे अवसर मिलेंगे। तृतीय सप्ताह में मिलाजुला परिणाम मिलेगा। मान यश बढ़ेगा। मासान्त अनुकूल नहीं है। सकारात्मक सोच से काम बनेगा। दिनांक 8, 14, 27, 29 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- आपके लिए माह अच्छा है। व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। हंसी-खुशी का वातावरण मिलेगा। विद्यार्थिगण अध्ययन में समय बितायेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनें आ सकती हैं। मनोरंजन में रुचि बढ़ेगी। शत्रुपक्ष कमजोर होगा। नए अनुबंध मिल सकते हैं। सकारात्मक सोच से ही आगे बढ़ेंगे। दिनांक 5, 12, 20, 22 नेष्ट हैं।

धनु- आपका यह माह ठीक है। पहले से चली आ रही समस्याएँ सुलझ जायेंगी। इष्ट-मित्रों से सहायता मिलेगी। कार्य-व्यापार में प्रगति होगी। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। पहले की अपेक्षा स्थिति में सुधार होगा। अभीष्ट की प्राप्ति होगी। धनागम बना रहेगा। आनन्दमय मनःस्थिति रहेगी। विद्यार्थियों का समय अनुकूल है। मासान्त में संघर्ष बढ़ेगा। दिनांक 2, 10, 23, 28 नेष्ट हैं।

मकर- आपका यह माह ठीक है। आर्थिक प्रगति सुनिश्चित है। धार्मिक कार्यों में व्यय करेंगे। शत्रुपक्ष पराजित होगा। किसी भी जरुरत के समय अनेक मददगार मिलेंगे। मित्र साथ देंगे। दैनिक व्यय बढ़ेगा। सोना, चांदी, भूमि, भवन खरीद सकते हैं। समय अनुकूल है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण रहेगा। शुभ कार्यों का सम्पादन होगा। रुका हुआ धन वापस होगा। पारिवारिक सुख मिलेगा। दिनांक 5, 11, 21, 28 नेष्ट हैं।

कुम्भ- आपका यह माह सामान्य है। धार्मिक कार्यों में जागरुकता बढ़ेगी। सद्बुद्धि का विकास होगा। मन प्रसन्न रहेगा। आत्मबल बना रहेगा। इच्छाशक्ति प्रबल रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। सभी प्रयास सफल होंगे। व्यक्तित्व में निखार आएगा। विनम्रता से काम लें। मासान्त में आलस्य बढ़ेगा। खरीद-फरोख्त से बचें। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। दिनांक 3, 12, 21, 28 नेष्ट हैं।

मीन- आपका यह माह ठीक है। अनेक उपलब्धियाँ हासिल होंगी। घर-परिवार आनन्दपूर्ण रहेगा। येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त होगी। व्यापार से धन मिलेगा। स्वास्थ सुख सामान्य रहेगा। अच्छे भोज्य पदार्थों के प्रति ललक रहेगी। मित्र सहयोग करेंगे। सन्तान सुख प्राप्त होगा। दिनांक 4, 13, 23, 29 नेष्ट हैं।

बुन्देलखण्ड में एनीमिया : समस्या एवं रोकथाम

डा. वन्दना कुमारी

देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में दक्षिण में 7 जनपद (ललितपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा व चित्रकूट) और मध्य प्रदेश के उत्तर में 6 जनपद (दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दतिया, सागर) में लगभग डेढ़ लाख वर्ग किलोमीटर में फैले क्षेत्र को ''बुंदेलखंड'' कहते है। बुंदेलखंड में खासकर महिलाओं में एनीमिया बड़ी समस्या है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में 74.70 महिलाओं में खून की कमी पायी जाती है। इससे महिलाओं के गर्भधारण करने में भी समस्या होती है अतः ध्यान न दिया जाने पर गर्भावस्था के दौरान जान भी जा सकती है। एनीमिया एक चिकित्सकीय स्थिति है, जिसमें हीमोग्लोबिन का स्तर सामान्य से नीचे चला जाता है, अर्थात् इस शरीर में खून की कमी भी कहते हैं।

एनीमिया के मुख्य कारण- भोजन में आयरन युक्त खाद्य पदार्थों की कमी, विटामिन बी-12 की कमी, शरीर से खून का बहना, दुर्घटना, चोट, घाव आदि, मसिक-धर्म में अधिक रक्तस्राव, समय से पहले लाल रक्त कोशिकाओं का नष्ट होना, गर्भावस्था में बड़े आयरन की आवश्यकता की पूर्ति न होना

एनीमिया के लक्षण- एनीमिया के लक्षण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं, कुछ सामान्य लक्षण इस प्रकार है- कमजोरी और थकान, चक्कर आना, त्वचा का रंग पीला होना, अनियमित दिल की धड़कन और सांस लेने में कठिनाई, मुंह में छाले, महिलाओं में असामान्य या बढ़ा हुआ मासिक धर्म रक्तस्राव, हाथों और पैरों का ठंडा पड़ना, आंखों के नीचे काले घेरे, भूख में कमी, चिड़चिड़ापन आदि

एनीमिया के दौरान घरेलू उपचार के द्वारा इस समस्या को कुछ हद तक कम किया जा सकता है हालांकि यह घरेलू उपाय एनीमिया की समस्या को पूरी तरह दूर नहीं कर सकते। एनीमिया के उपचार के लिए डॉक्टर की परामर्श अवश्य है तथा बुंदेलखंड में पाए जाने वाले फल एवं सब्जी आदि खाद्य पदार्थों की मदद से हम एनीमिया की कुछ हद तक रोकथाम कर सकते हैं। जैसे-

1. **चुकंदर-** इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और डाइटरी फाइबर जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते हैं वह विटामिन बी6 राइबोफ्लेविन और थायमिन जैसे विटामिन भी पाए जाते हैं। चुकंदर में आयरन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। जो शरीर में खून की कमी को दूर करने में सहायक है। आयरन के साथ-साथ इसमें कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस और मैग्नीशियम जैसे मिनरल भी मौजूद होते हैं। अगर आपको एनीमिया की समस्या है तो आप डाइट में चुकंदर शामिल कर सकते हैं। चुकंदर का उपयोग सलाद के तौर पर चटपटी चटनी व जूस बनाकर कर सकते हैं।

2. **फलियां-** कुछ प्रसिद्ध फलियां जैसे मटर, बीन, मसूर, मूंगफली आदि फलियों में फाइबर, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन बी, आयरन, कॉपर, मैग्नीशियम आदि पोषक तत्व पाए जाते हैं। बुंदेलखंड में हरी मटर, बीन, मसूर, मूंगफली जैसी फलियों का उत्पादन सर्वाधिक होता है। जो कि शरीर में आयरन की कमी को पूरा करने में सहायक है। फलियों का उपयोग दाल, सब्जी व अंकुरित करके कर सकते हैं व इनका सालों साल भंडारण करके भी रख सकते हैं जिससे इनका उपयोग पूरे वर्ष में कर सके।

3. **मशरूम-** बुंदेलखंड परिक्षेत्र में मशरूम उत्पादन के लिए जलवायु अनुकूल है। मशरूम की कुछ प्रजातियों में अत्यधिक मात्रा में आयरन पाया जाता है, जिसमें से एक ऑइस्टर मशरूम है। मशरूम का सेवन करने से शरीर में खून की कमी को दूर कर सकते हैं। मशरूम का सेवन मशरूम सूप,

सब्जियां जिसमें मेथी, पालक, बथुआ, सरसों व चौलाई आदि इसमें आयरन की मात्रा अधिक होती है। विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन बी, जटिल समूह के विटामिन, लौह तत्व व कुछ मात्रा में प्रोटीन भी पाया जाता है। ये सभी सब्जियां बुन्देलखण्ड में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है, इनके सेवन करने से रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ जाता है।

10. विटामिन सी युक्त फल व सब्जी- नींबू प्रजातिय फल (माल्टा, संतरा, कागजी नींबू, ग्रेपफ्रूड, आंवला, करौदा, और चकोतरा) विटामिन-सी के अच्छे स्रोत के रूप में प्रचलित है इसके साथ ही ये फल शर्करा, सिट्रिक अम्ल, खनिज तत्व (कैल्शियम, पोटेशियम) के भी अच्छे स्रोत हैं। ये सभी आयरन के अवशोषण में सहायक है। ये सभी बुंदेलखंड की मिट्टी में उपजाऊ है। इन सभी का उपयोग हम अचार, जूस, स्कवैश, कैंडी, जैम व मुरब्बा आदि के रूप में कर सकते हैं।

मशरूम मटर, मशरूम करी, मशरूम मसाला, कढ़ाई मशरूम विभिन्न प्रकार से कर सकते हैं।

4. तिल- बुंदेलखंड में तिलहन मुख्य फसल है यहां की जलवायु तिलहन के लिए उपयुक्त है। काले तिल में कैल्शियम, फाइबर, मैग्नीशियम, फास्फोरस, कॉपर, मैंग्नीज, जिंक, व आयरन ;19ण्29उहद्ध पाया जाता है जो कि शरीर में आयरन की कमी को दूर करने व इम्युन सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करता है। काले तिल का उपयोग आमतौर पर सर्दियों में किया जाता है, इसका उपयोग खाने की कई तरह की चीज जैसे- तिल के लड्डू और गजक बनाकर कर सकते हैं।

5. काला चना- बुंदेलखंड में मध्य प्रदेश के जनपदों में चने का उत्पादन किया जाता है। चने में भरपूर मात्रा में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, मैग्नीशियम, व आयरन ;4ण्31 उहद्ध का एक अच्छा स्रोत है, काला चना शरीर में आयरन की कमी को पूरा करता है व एनीमिया ग्रस्त लोगों के लिए लाभकारी है। इसका उपयोग चाट, अंकुरित चना, सब्जी हलवा व दाल आदि के रूप में कर सकते हैं।

6. खजूर- खजूर में कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, मैग्नीशियम, और कॉपर की भरपूर मात्रा होती है। इसके अलावा इसमें आयरन 5ः और विटामिनस भी पाए जाते हैं। यह शरीर में रक्त को बनाने में सहायक है इसका उपयोग रात भर पानी में भिगोकर या कच्चा भी खा सकते हैं

7. अनार- अनार में फाइबर, विटामिन- के, विटामिन बी, विटामिन सी, जिंक, ओमेगा-6 फैटी एसिड वह आयरन ;0ण्3 उहद्ध पाया जाता है जो की खून में हीमोग्लोबिन बनाने में सहायक होता है जिससे एनीमिया को कुछ हद तक दूर कर सकते है।

8. गुड़- गुड़ में जिंक, एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन भी पाया जाता है। इसके नियमित सेवन से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है व महिलाओं के गुड़ के नियमित सेवन से शरीर में इंफेक्शन का खतरा भी कम होता है तथा शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ जाती है जिसके फलस्वरुप एनीमिया का खतरा कम रहता है।

9. हरी सब्जियां- हरी पत्तेदार

रक्त में लौह तत्व की कमी से हीमोग्लाबिन कम हो जाता है परन्तु यह समस्या दीर्घकालिक न हो इसके लिये आवश्यक है कि किशोरियों एवं महिलाओं को एनीमिया के करणों, लक्षणो और रोकथाम के बारे में जागरूक किया जाये तथा आयरन, फोलिक एसिड एवं विटामिन बी12 से भरपूर खाद्य पदार्थो की जानकारी दी जायें साथ ही साथ नियमित स्वस्थ्य जांच के द्वारा एनीमिया की पहचान की जायें तथा किशोरियों एवं महिलाओं को स्वच्छता और साफ-सफाई का महत्व बता कर उन्हे संक्रमण से बचाया जा सकता है।

सह प्राध्यापक, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

बालको अस्पताल में प्लास्टिक सर्जरी भी उपलब्ध

बालको अस्पताल में अब प्लास्टिक एवं रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अस्पताल के नए प्लास्टिक सर्जन डॉ. सी. साई कुमार अब मरीजों को अत्याधुनिक प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जरी की सेवाएँ प्रदान करेंगे। अब चेहरे और शरीर से जुड़ी जटिल सर्जरी की आधुनिक सेवाएँ बालको अस्पताल में उपलब्ध हैं।

डॉ. कुमार प्लास्टिक और पुनर्निर्माण सर्जरी में प्रशिक्षित विशेषज्ञ हैं। उन्होंने अपनी डीआरएनबी ट्रेनिंग शिजा हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, इम्फाल से पूरी की है। छह साल के अनुभव के साथ उन्हें चेहरे की पुनर्निर्माण सर्जरी, जन्मजात विकृतियों का उपचार जैसे कटे होंठ, जलने के बाद सुधारात्मक सर्जरी, ट्रॉमा एवं दुर्घटना के बाद इलाज एवं कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेषज्ञता हासिल हैं।

बालको के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. विवेक सिन्हा ने कहा कि नए विशेषज्ञ के जुड़ने से मरीजों को अब प्लास्टिक सर्जरी के लिए बड़े शहरों तक जाने की आवश्यकता नहीं होगी। सर्जरी से केवल मनचाहा बदलाव ही नहीं मिलता, बल्कि इससे आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इस सर्जरी के जरिए नाक, चेहरे, गाल, कान, ठुड्डी, होंठ और ब्रेस्ट को परफेक्ट शेप दिया जा सकता है। इसके साथ ही दुर्घटनाओं अथवा गंभीर बीमारियों के कारण प्रभावित लोगों में खोए हुए चेहरे के साथ खोया हुआ आत्मविश्वास भी वापस लौट आता है। उन्होंने कहा कि बालको अस्पताल का उद्देश्य है कि जिले के लोगों को घर के नजदीक ही सर्वोत्तम स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हों।

प्लास्टिक सर्जरी में शरीर के किसी भी अंग का टिश्यू लेकर दूसरे अंग को ठीक किया जाता है, जिससे किसी भी महिला या पुरुष के शरीर को आकर्षक और नया रूप दिया जा सकता है। किसी दुर्घटना में अपना अंग क्षतिग्रस्त होने पर यह सर्जरी मददगार साबित होती है। साथ ही आग और तेजाब से घायल होने वालों के लिए भी प्लास्टिक सर्जरी वरदान साबित हुई है।

हालांकि, प्लास्टिक सर्जरी का दायरा केवल उपचार तक सीमित नहीं है। आजकल इसका सबसे ज्यादा प्रयोग लोगों द्वारा अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए किया जाता है। आंकड़ों के अनुसार, हमारे देश ने प्लास्टिक सर्जरी के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। ●

पुजारा ने किया रिटायरमेंट का ऐलान

भारतीय क्रिकेट में एक और युग का अंत हो गया है। दरअसल, महान बल्लेबाज राहुल द्रविड़ के बाद भारतीय टीम की टेस्ट की दीवार कहे जाने वाले चेतेश्वर पुजारा ने क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया है। चेतेश्वर पुजारा न सिर्फ इंटरनेशनल क्रिकेट में बल्कि प्रोफेशनल डोमेस्टिक क्रिकेट में भी आपको अब खेलते हुए नहीं दिखेंगे। पुजारा ने आखिरी इंटरनेशनल क्रिकेट मैच भारत के लिए 2023 में खेला था जो वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023 का फाइनल था।

दाएं हाथ के बल्लेबाज पुजारा ने सोशल मीडिया के जरिए अपने रिटायरमेंट की जानकारी दी। उन्होंने एक लंबा पोस्ट लिखा कि, भारतीय जर्सी पहनना, राष्ट्रगान गाना और हर बार मैदान पर कदम रखते ही अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करना- इसका असली मतलब शब्दों में बयां करना नामुमकिन है, लेकिन जैसा कि कहते हैं हर अच्छी चीज का अंत होना ही होता है और यही हो गया है। अपार कृतज्ञता के साथ मैंने भारतीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने का फैसला किया है। आप सभी के प्यार और समर्थन के लिए धन्यवाद।

37 वर्षीय पुजारा ने अपने रिटायरमेंट नोट में लिखा कि, एक छोटे से शहर राजकोट का बच्चा होकर मैं अपने माता-पिता के साथ सितारों को छूने का सपना लेकर निकला था और भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनने का ख्वाब देखा था। तब मुझे अंदाजा भी नहीं था कि ये खेल मुझे इतना कुछ देगा- अनमोल अवसर, अनुभव, उद्देश्य, प्यार और सबसे बढ़कर अपने राज्य और इस महान राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का मौका। भारतीय जर्सी पहनना,राष्ट्रगान गाना और हर बार मैदान पर कदम रखते ही अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करना- इसका असली मतलब शब्दों में बयां करना नामुमकिन है, लेकिन जैसा कि कहते हैं हर अच्छी चीज का अंत होना ही होता है और यही हो गया है।

आकर्षी ने कैमरून इंटरनेशनल चैलेंज में जीता कांस्य

भारत की उभरती हुई बैडमिंटन स्टार आकर्षी कश्यप ने कैमरून इंटरनेशनल चैलेंज 2025 में कांस्य पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन इंटरनेशनल चैलेंज सीरीज़ का हिस्सा है। याउंडे, कैमरून में आयोजित इस टूर्नामेंट में दुनिया के शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया, जिससे आकर्षी की यह उपलब्धि देश के लिए गर्व का क्षण बन गई।छत्तीसगढ़ की रहने वाली आकर्षी को एनटीपीसी कोरबा की कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पहल के अंतर्गत सहयोग प्राप्त है, जिसका उद्देश्य खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देना और युवाओं को अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाना है। अपनी खुशी व्यक्त करते हुए आकर्षी कश्यप ने कहा, 'कैमरून इंटरनेशनल चैलेंज में कांस्य पदक जीतना मेरे लिए गर्व का क्षण है। दुनिया के शीर्ष खिलाड़ियों के खिलाफ मुकाबला करना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन इसने मुझे और बड़ी जीत हासिल करने के लिए प्रेरित किया है। मैं एनटीपीसी कोरबा की निरंतर सहायता और प्रोत्साहन के लिए गहरी आभारी हूं। उनके विश्वास से मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।' कैमरून इंटरनेशनल चैलेंज 2025 को बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन कैलेंडर में मान्यता प्राप्त है और यह खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग अंक अर्जित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

रीम ने देसी अंदाज से लूटा फैंस का दिल

बाल कलाकार के रूप में करियर शुरू करने वाली रीम शेख इस वक्त टीवी इंडस्ट्री के बड़े नामों में से एक हैं। 'तुझसे है राब्ता,' 'तेरे इश्क में घायल' और 'फना' जैसे टीवी सीरियल में नजर आईं रीम शेख ने सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरें पोस्ट कीं। अभिनेत्री 'इंस्टाग्राम' पर पोस्ट की गई तस्वीरों में गजब की अदाओं के साथ पोज देती नजर आईं। उन्होंने सफेद रंग के दुपट्टे के साथ पिंक कलर की स्कर्ट कैरी की, जिसने उनके लुक में चार चांद लगा दिए। अभिनेत्री ने 'इंस्टाग्राम' पर इसे कैप्शन दिया, 'रहने दे मुझे यूं उलझा हुआ-सा तूझ में, सुना है सुलझ जाने से धागे अलग-अलग हो जाते हैं।'

अभिनेत्री की ये तस्वीर प्रशंकों को काफी पसंद आ रही है। वे तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'आप इतनी सुंदर कैसे हो?' तो दूसरे यूजर ने लिखा, 'सुपर' और एक और यूज़र ने लिखा, 'मैम, क्या आप अपनी प्लेलिस्ट शेयर कर सकते हो?' एक अन्य यूजर ने लिखा, 'आप बहुत सुंदर हो।' रीम शेख के करियर की बात करें, तो उन्होंने बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट करियर की शुरुआत की थी। मात्र 6 साल की उम्र में उन्होंने 'नीर भरे तेरे नैना देवी' टीवी सीरियल में काम किया था। इसके बाद वह 'मैं आजी और साहिब', 'ये रिश्ता क्या कहलाता है', 'खेलती है जिंदगी आंखमिचोली', जैसे कई टीवी शोज में नजर आई थीं।

शिल्पा शेट्टी ने बताए योग के आसान तरीके

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी न सिर्फ अपने अभिनय के लिए चर्चाओं में रहती हैं बल्कि अपनी हेल्दी लाइफस्टाइल और पॉजीटिव सोच के लिए भी चर्चा में रहती हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए योग के महत्व पर प्रकाश डाला है। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट करके बताया कि कैसे योग पैरों की निचली मांसपेशियों को लचीला बनाता है। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि कुछ योगासन से झुकना या बैठना आसान हो जाता है। शिल्पा ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वह योगासन करती नजर आ रही हैं। उन्होंने इसके कैप्शन में लिखा, 'जब आप योग मैट पर हों, तो बस उसी पल में रहें।'

अभिनेत्री ने आसन के बारे में भी जानकारी दी। समझाते हुए लिखा, 'ये पोज पैरों की निचली मांसपेशियों को लचीला बनाता है – खासकर कूल्हों, हैमस्ट्रिंग्स (जांघ के पिछले हिस्से), अंदरूनी जांघों और ग्रोइन को अच्छे से खींचता है।रोजमर्रा की हरकतें जैसे नीचे झुकना या बैठना (स्क्वाट करना) आसान हो जाती हैं। कूल्हों की जकड़न कम होती है और वहां की हड्डियां और मांसपेशियां ज्यादा खुलती हैं। टखनों और घुटनों में रक्तसंचार बढ़ता है जिससे वे मजबूत बनते हैं। पेल्विक (शरीर के निचले हिस्से) की मांसपेशियों को भी स्ट्रेच और मजबूत करता है। शरीर का संतुलन और स्थिरता बेहतर होती है–यह पेट और आसपास की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, जिससे शरीर का नियंत्रण बढ़ता है।

शिल्पा हमेशा खुद को फिट रखने पर ज़ोर दिया करती हैं। इसके लिए वह रोजाना वर्कआउट करती हैं। उन्होंने जिम के जरिए अपनी ताकत और लचीलापन बढ़ाया है। ●

विश्वास करेंगे एक बार, इस्तेमाल करेंगे बार-बार...

SRI HARIVANSH ENTERPRISES

Corp. Of Goel Tower Anura Kala, Chinhat Lucknow-226028 (U.P.)
Production Unit: Sandauli Umarpur, Safedabad, Barabanki - 225003 (U.P.)
Customer Care No.: +91 9415867528

UPI
UNIVERSAL
Plasto Industries

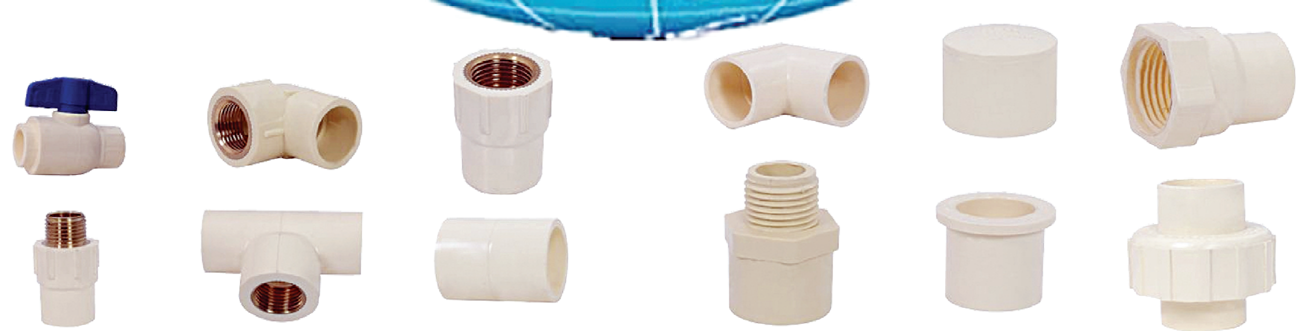

सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309 मो0 - 9811191393